ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-11 सितंबर-I, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

'भारत गौरव लाइफ टाइम अचीवमेंट' अवार्ड से सम्मानित दादी जानकी

लंदन। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को पश्चिमी देशों में भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना में योगदान के लिए लंदन के संसद हाऊस ऑफ कॉमन्स में भारत गौरव लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान ब्रिटेन की जलवायु परिवर्तन एवं ऊर्जा मंत्री बारानोस वर्मा, ब्रिटिश सांसद विरेन्द्र शर्मा, ब्रिटेन में भारत के उप-उच्चायुक्त विरेन्द्र पाल एवं संस्कृति युवा-संस्थान के अध्यक्ष सुरेश मिश्रा द्वारा दिया गया। स्वास्थ्य कारणों से दादी जानकी नहीं आ सकीं, उनका प्रतिनिधित्व ब्रह्माकुमारी संस्थान के यूरोपीय सेवाकेन्द्रों की मुखिया ब्र.कु. जयन्ती ने किया।

इस अवसर पर भारत के नामचीन लोगों के साथ भारत मूल के केन्याई उद्योगपति, एडिडास स्पोर्ट्स के चेयरमैन तथा आगा खां विकास बोर्ड के मैनेजिंग डायरेक्टर निज़ार जुमा को भारत में ब्रह्माकुमारीज़ के साथ फ्यूचर ऑफ पावर के जरिए भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने में योगदान के लिए भारत गौरव लाइफ टाइम अवीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भारत सहित पूरे विश्व के कई देशों में आध्यात्मिकता एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया।

लंदन। दादी जानकी जी को दिए गए 'भारत गौरव लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड को प्राप्त करते हुए यूरोप की निदेशिका ब्र.कु. जयन्ती।

समर्पित राजयोग शिक्षिकाओं का सम्मान समारोह

डायमण्ड हॉल में संस्था से 15 से 20 वर्षों से ईश्वरीय सेवाओ में जुड़ी भारत तथा नेपाल की ढ़ाई हज़ार ब्रह्माकुमारी बहनों का सम्मान।

शांतिवन। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के डायमण्ड हॉल में संस्था से 15 से 20 वर्षों से ईश्वरीय सेवाओ में जुड़ी बहनों का सम्मान किया गया। शांतिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में देश के कई हिस्सों से आए कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियों से दर्शकों को सराबोर कर दिया। ओडिशा के कलाकारों ने नारी की शक्ति के अवतार व शक्ति स्वरूपा की प्रस्तुतियां दी। लोगों को अहसास कराया कि यदि नारी मूल्यों को जीवन में अपनाए तो उसके जीवन में शांति और शक्ति का संचार हो सकता है। कलाकारों ने भारत का रहने वाला हूं..., सत्यम शिवम सुन्दरम... आदि गीतों पर वाहवाही लूटी। नृत्य नाटिका के माध्यम से नारी शक्ति के सभी अवतारों की चित्ताकर्षक प्रस्तुतियां दी। इस दौरान संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हमारा जीवन सिर्फ हमारे लिए नहीं है। बल्कि, मानव जीवन को सच्ची राह दिखाने के लिए है। वर्तमान में पश्चिमी संस्कृति की आंधी चारो ओर बह रही है। परमात्मा के नियमों पर चलने से ही बदलाव आएगा। संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि त्याग व तपस्या से आपने भगवान को भी प्राप्त कर लिया है। यह आपके केवल इस जन्म की ही नहीं बल्कि अनेक जन्मों की तपस्या का फल है। उसने ही आपको इतना महान बनाया है।

वे संस्था से जुड़ी वे बहने हैं, जो पवित्रता, आनंद और शांति के रास्ते पर चलते हुए मानवता की सेवा कर रही हैं। पूरे देश भर में युवा बहनें सभी वर्गों में मूल्यनिष्ठता के लिए प्रयासरत हैं। युवा बहनों को सजाया गया। उन्हें ताज पहनाकर व स्वर्णिम चुन्नी ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. मोहिनी, कार्यक्रम संयोजिका ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. सुषमा, ब्र.कु. चक्रधारी समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

शांतिवन। सम्मान समारोह का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. शारदा तथा सम्मानित बहनें।

कर्म को 'कर्त्तव्य' बनायें

इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर कुलियों का एक झुण्ड बैठा था। दो-तीन सामान उठाने में उनकी रुचि नहीं थी। इतने में एक वृद्ध कुली आगे आता है। लूंगी और लाल रंग की कफनी, बढ़ी हुई दाढ़ी, फिर भी चेहरे पर निराशा का नाम नहीं। सामान उठाकर वो धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। तेज़ चला नहीं जाता, जिसका सामान वो सिर पर उठाए चलता है वो तीर्थयात्री भी ज़्यादा उम्र के कारण तेज़ी से नहीं चल पाता। दोनों की वेदना समान है, प्लेटफॉर्म पर पहुंचते हैं। यात्री कुली से पूछता है: ''आपसे वजन उठाया नहीं जाता ये सही है, फिर भी आपके मुख पर दु:ख या निराशा की कोई छाया दिखाई नहीं देती, उसका मुझे आश्चर्य है!

- ब्र. कु. गंगाधर

कुली ने बड़े स्मित भरे स्वर में कहा: ''संसार बसाकर बैठे हैं, इसलिए परिवार के खातिर कर्त्तव्य तो अदा करना ही पड़ेगा। उसे भार या बोझ समझ के कर्म करुँ तो कर्त्तव्य में मिठास नहीं आयेगी और मैं अपने दु:ख की छाया मेरे अन्नदाता मुसाफिर या यात्री के ऊपर क्यों पड़ने दूँ?

आज सिर्फ लोग अधिकार की बातें करते, कर्त्तव्य का सिर्फ मशीनी रूप से निर्वहन करते, कमाई करके जैसे कुटुम्ब पर उपकार करते हों। और जब लोगों से बाते करते, कोई तो हमारी राम कहानी सुनो। अब आप ही बताइए क्या कुली की कर्तव्यपरायणता और कर्म प्रसन्नतापूर्वक अदा करने की उदार भावना बहुत कुछ नहीं कह जाती है!

उसी दिन अनिल श्रीवास्तव का एक अखबार में लिखे किस्से की ओर ध्यान जाता है। उसमें महाराष्ट्र के एक कृष्ण मंदिर का उल्लेख था। उस मंदिर से संबंधित एक कथा प्रचलित है कि कृष्ण की भक्ति करने वाले भक्त पर प्रसन्न हुए भगवान स्वयं चलकर मिलने पहुंच गये। उस वक्त वो भक्त माँ की सेवा में व्यस्त था। सामने एक ईंट पड़ी थी। वो भक्त ईंट की ओर इशारा कर भगवान कृष्ण को कहता है कि आप कृपा कर थोड़ी देर के लिए इस ईंट पर बिराजिए। अभी मैं माता की सेवा में व्यस्त हूँ। श्रीकृष्ण स्वयं आये हुए हैं, ये जानते हुए भी भगवान के बदले वो भक्त माता के प्रति अपने कर्त्तव्य को सर्वस्व मानता है।

कर्म में निष्ठा और समर्पण का समावेश हो तो कर्त्तव्य का रूप धारण होता और बोरियत और यांत्रिकता मिले तो व्यर्थ का रूप धारण होता है। काम करना एक बात है लेकिन काम को स्फूर्ति,आनंद, प्रीति और भावनापूर्वक अदा करना ये दूसरी बात है। आज सरकारी, अर्धसरकारी या स्वयंभू संस्थाओं के लोग असंतोष और फरियाद करते दिखाई देते हैं, उसका कारण यही है क्योंकि कर्म में शुद्धता और आनंद के समावेश का अभाव रहता है। इसलिए काम में बरकत नहीं आती। काम को व्यर्थ समझते कर्मचारी 'नौकर' है, क्योंकि वे धन के लिए नौकरी करते हैं। कर्म को कर्त्तव्य समझ खुद की तमाम शक्ति और भावना स्वयं को अगर दे दी जाती तो वो ली गई ज़िम्मेदारी खुद के प्रति निष्ठावान तथा सम्पूर्णरूप से न्याय देने वाली होती। इस तरह विचार करने वाला कर्मचारी 'नौकर' नहीं लेकिन भगवान के प्रीति पात्र 'सेवाधारी' है।

कर्म और कर्त्तव्य के प्रति उदार दृष्टि कर्म को प्रकाशित करता है। उत्तरदायित्व (फर्ज़) को ईश्वर भक्ति मानने वाला कर्मचारी या अधिकारी, भ्रष्टाचार, कामचोर, या पलायनवादी आचरण नहीं करेगा, कर्म ही देवता और कर्त्तव्य रूप से पलायनवाद ही जहन्नुमी इन्सान की खासियत है।

समाजसेवा करने वाले के पक्ष में कार्य में फर्ज़ अदा करने वाले व्यक्ति कई बार ऐसी वकालत करते हैं कि फर्ज़ के बदले में उसे क्या मिला? उच्च पद पर विराजित तो 'बडे' लोग हो गये, हम तो जहां थे वैसे ही रह गये।

लेकिन हरेक व्यक्ति कर्म के फर्ज प्रति मात्र आसक्ति या फल प्राप्ति लालच रखकर ही कर्म करते तो कर्म गौण बन जाता और वे 'कर्त्तव्य' के न्याय तक पहुँच नहीं सकते। कर्म बोझ बनकर करते व्यक्ति काम को निपटाता, काम दीप उठे ऐसी भावना उनके मन में न रहने से कार्य उत्तम रीति से करने का संतोष और आनंद उसे नहीं मिलता। ऐसी मनोवृत्ति वाले लोग के मन में कम काम करना पड़े यही संतोष और आनंद की बात होती है। - शेष पेज 7 पर...

पवित्रता और योगबल से नई दुनिया का निर्माण

अमृतवेला और नुमाशाम यह दोनों बातों में कोई बहाना नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसा संगठन फिर सारे कल्प में नहीं मिलेगा। इतना संगठन से प्रेम है, सुख है तो वो प्रेम, वो सुख खींच के ले आता है। अकेला बैठेंगे याद करेंगे, कोई-न-कोई काम मिल जायेगा तो उठ के खड़े हो जायेंगे। यहाँ (संगठन) से कोई नहीं खींचता है, जिसको आना है यहाँ आ जाये। तो संगमयुग के समय का महत्व हो और हमारी संगम की याद एक्यूरेट रहे तो बाबा कहेगा बहुत अच्छा। कोई भी कारण से अगर और कोई बात याद आई... नहीं आयेगी।

बाबा की बातों को न बिसरो, बाकी कोई बात याद नहीं करो, इतना अच्छा यह मंत्र है, इससे बहुत खुशी रहेगी, और इस खुशी में बड़ी कमाई है। कमाई की खुशी है। हमारी यह साधारण खुशी नहीं है, सदाकाल की खुशी है इसलिए ऐसी पढ़ाई को पढ़ते-पढ़ते थकते नहीं हैं क्योंकि इस पढ़ाई में शक्ति है। बाबा की एक-एक बात को जितना रिवाइज करते हैं, उतना शक्ति का अनुभव होता है।

कोई-न-कोई बाबा के बच्चों को, कोई-न-कोई स्व-उन्नति एवं विश्व सेवा में इन्वेन्शन की टचिंग आती है, जो उनके कार्य से उनका भी भाग्य और सेवा में भी कुछ यादगार बन जाता है। अभी देखो क्या भण्डारा बनाया है। कमाल है बाबा के बच्चों की। पहले तो सब काम हम खुद ही करते थे तो वो दिन भी प्यारे थे जो शिवबाबा साथ हमारे थे। शिवबाबा ब्रह्माबाबा में आया एक्यूरेट बनाने के लिए, पढ़ाई और पालना ऐसी वन्डरफुल दी है। एक बार बाबा ने 36 प्रकार का भोजन बनवाया और कहा कि अभी जितना चाहे उतना खाओ। फिर रात को पूछा कौन-सी चीज़ अच्छी थी? तो किसी ने कहा यह अच्छा था, किसी ने कहा यह अच्छी थी, तो बाबा ने कहा फेल। फिर दूसरे तीसरे दिन ऑर्डर किया सिर्फ डोडा, छाछ और दाल मिलेगी, आज इतना ही मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा। जिसको यही खाना हो वही रहे, जो नहीं खा सकते हैं वो जाके सो जाये माना जहाँ कोई बीमार रहते हैं वहाँ जाके रहें।

तो वन्डर तो यह हुआ जो अच्छे तन्दरूस्त थे, उनको लगा मैं बीमार न पड़ जाऊं इसलिए वो गये और जो बिचारे बीमार भी थे वो बैठ गये लस्सी डोडा खाने के लिए। उनकी बीमारी चली गयी। जैसे दादी गुल्ज़ार और कुछ नहीं बोलेगी जो बाबा ने कहा है वही किया है, इसका रिकॉर्ड है। कभी भी रिकॉर्ड हमारा खराब न हो माना बाबा का रिगार्ड रखना। जिसको बाबा के लिए रिगार्ड है उसका रिकॉर्ड अच्छा होगा। है छोटी बात परंतु सारा राज्य पद, प्रजा पद का आधार है-रिकॉर्ड अच्छा रखना।

रिकॉर्ड अच्छा रखना कितना शान है, अन्दर से लगता है परचिंतन नहीं, स्व-दर्शन चक्र फिराओ, बाबा की याद में रहने से ऑटोमेटिक बुद्धि ऊपर चली जायेगी। नैचुरल है ऊपर जो बुद्धि गई, तो नेक्स्ट स्वदर्शन, सारे चक्र की याद आ गई। चक्र याद आने से झाड़ और बीज की याद आ गई। बीज ऊपर है,

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

वो बीज नीचे होता है। परमधाम से आत्मायें जब नीचे आती हैं तब सीधा ही उनको दु:ख नहीं मिलता है। पर हम जो आत्मायें हैं सिर्फ शुद्ध नहीं हैं, बाबा ने हमारे में पवित्रता भी भरी है। पवित्रता क्या है? इस पर कम-से-कम आधा घण्टा विचार करो। पवित्रता और योगबल से बाबा नई दुनिया बना रहा है। पवित्रता से योग लगे, उसका बल मिले।

शिव शक्ति पाण्डव सेना को न मान चाहिए, न शान चाहिए, ऐसी स्थिति बनाना सिर्फ सौभाग्यशाली नहीं, पदमापदम भाग्यशाली है। ऐसी स्थिति बनाना माना बहुत कमाई करना जो गिनती नहीं कर सकते हैं। जब से बाबा समर्पण हुआ, बाबा ने नोट को हाथ नहीं लगाया। हमें भी कौन-सी कितने की है वो मालूम नहीं था, पर यहाँ आ करके सीखना पड़ा। पहले आना दो आना चलते थे, कहते थे एक बारी आना, एक आना। एक बारी आने में भगवान कहता है कहाँ आये हो, किसके पास आये हो? मैं कहती हूं मरना हो तो एक धक से मरो, हूं हां करके नहीं मरो, अन्त मते सो गते ऐसे हो जायेगी।

विकर्म विनाश होने की निशानी 'हल्कापन और खुशी'

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न:- एक मुरली में बाबा ने कहा है कि तुम सिर्फ मुझे देखो और मेरी करेन्ट लो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे, तो क्या देखें? कैसे करेन्ट लें जो विकर्म विनाश हो जायें। अगर विकर्म विनाश हो रहे हैं तो उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- बाबा को देखेंगे तो बाबा के मस्तक में जो आत्मा बिन्दू है, उसको ही देखेंगे ना, उसी से ही शक्ति लेंगे तो विकर्म भी विनाश होंगे। लेकिन उसी रीति से योग में बैठेंगे तो! लक्ष्य होगा तो लक्ष्य से हो जायेगा। विकर्म विनाश हो गये तो उसकी निशानी, हल्कापन आयेगा और खुशी होगी। जैसे कोई बीमारी खत्म होती है तो क्या फीलिंग आती है? ऐसे यह भी एक रौनक अपने मन के अंदर अच्छी होगी। अटेन्शन होगा तो संस्कार भी चेंज होंगे। योग से ही पुराने संस्कार परिवर्तन होंगे। किसी भी रीति से योग लगाओ, योग तो अग्नि है उसमें संस्कार परिवर्तन ज़रूर होंगे। फिर वह संस्कार बीच-बीच में इमर्ज नहीं होंगे। जैसे कोई किचड़ा निकलता है, पेट ठीक नहीं है, पेट साफ हो जाता है तो कितना फर्क पड़ जाता है। ऐसे अपनी बुद्धि क्लीयर हो जायेगी तो अपनी मौज में रहेंगे। अन्दरूनी खुशी होगी। जैसे कभी-कभी अचानक ऐसे होता है कि आज मुझे क्या हुआ है जो अंदर ही अंदर बहुत खुशी हो रही है। ऐसे भिन्न-भिन्न अनुभव हो सकते हैं।

प्रश्न:- बाबा मुरलियों में कहता है, तुम्हें बाप समान बनना है, सम्पन्न बनना है। तो किन-किन बातों में हमें सम्पन्नता की ओर जाना है, हम सम्पन्नता के नज़दीक पहुँच रहे हैं उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- सम्पन्नता के नज़दीक पहुँचे हैं या दूर हैं, वह तो अपनी अवस्था से ही पता चलेगा। मानो हमको बीच-बीच में कोई बात देखकर व्यर्थ संकल्प चल जाते हैं, तो पता है ना, जब सम्पन्नता के नज़दीक पहुँचेंगे तो उसमें फर्क होगा। जो भी हमारे में कमी होगी, अगर हमारा अपने पर अटेन्शन है तो वह कमी नज़र आयेगी। समझो व्यर्थ चलता है, उसके लिए मैं कोशिश करूं कि व्यर्थ नहीं आवे, खास मैं ऐसा क्यों सोचूं, क्या पुरुषार्थ में अटेन्शन दूं, जो व्यर्थ न आवे।

प्रश्न:- जब ब्रह्मा बाबा के बारे में सोंचते हैं या सुनते हैं और अपने को देखते हैं, उनके साथ अपनी भेंट करते हैं तो सूक्ष्म वा स्थूल दोनों में बहुत डिफरेन्स दिखाई देता है, तो उस दूरी को निकालने के लिए हमें क्या करना होगा?

उत्तर:- करना तो हर एक को अपना पुरुषार्थ है। अपने में जो कमी दिखाई दे, उसकी तरफ अटेन्शन जाये और फिर पुरुषार्थ करे। ऐसे ही नहीं, ठीक हो रहा है, ठीक हो जायेगा, नहीं। लेकिन हमारी कमी क्या है, वह चेक होवे और उसपर अटेन्शन हो।

प्रश्न:- बाबा कहता है, बच्चे तुम्हें दु:खी, अशान्त आत्माओं की पुकार सुनाई नहीं देती है, लेकिन उन आत्माओं तक तो हमारा संकल्प पीछे जायेगा, पहले जो हमारे आजू-बाजू में रहते, जो वातावरण है, कम से कम वहाँ तक तो हमारा संकल्प जावे, अभी तक तो वह भी नहीं होता है?

उत्तर:- हो सकता है, हमारे संकल्प में पावर कम हो लेकिन जो लेने वाले हैं उन्हों को भी तो होना चाहिए। लेने वाले को लेने की इच्छा ही नहीं है तो आपका पहुँचेगा कैसे।

आनंद का दूसरा नाम श्रीकृष्ण

जैसे चाँद की चाँदनी की कीमत चकोर को, स्वाति नक्षत्र के बूंद की कीमत एक सीप को होती है वैसे ही हमारे और आप सबके ज़हन में एक बहुमूल्य, बेशकीमती अति प्यारा, अति दुलारा, एक ऐसे जन्नती इन्सान की भी कीमत है, जिसे हर कोई छूना चाहता है, प्यार करना चाहता है, उसे पुचकारना चाहता है। सभी उसके एक दर्शन के दर्शनाभिलाषी होते हैं, उस अहम पाकीज़गी वाले जन्नती इन्सान का नाम श्रीकृष्ण है।

एक मौलवी साहब से पूछा गया कि आप आयतें पढ़ते हैं, उन आयतों में आप हमेशा इल्म और शैतानी आदतों से अलग रहने की बात करते हैं। क्या आप उस इन्सान को एक मुकम्मल नाम दे सकते हैं? तो मौलवी साहब का जवाब था, जनाब वह जन्नती खूबियों वाला इन्सान फरिश्ता ही हो सकता है, और तो कोई हो नहीं सकता।

सभी धर्मों ने अपने-अपने आदर्श बनाए हुए हैं। आदर्श उसे कहते हैं जिसमें हम अपना दर्शन कर सकते हैं, वैसे भी दर्शन शब्द 'दृष' धातु से निकला है, जिसका अर्थ है देखना। वे खूबियाँ जिनमें नज़र नहीं आती उसे आम इन्सान, जिसमें थोड़ी बहुत नज़र आती है उसे खास इन्सान और जिनमें थोड़ी दिव्यता जुड़ जाती है उसे जन्नती इन्सान की संज्ञा दी जाती है।

उपरोक्त दिव्य नामों में एक नाम 'कृष्ण' का है। कृष्ण शब्द अपने आप में सम्पूर्ण है जो 'कृष' धातु से निकला है, जिसका अर्थ है आकर्षित करना। अब आकर्षित कौन करता है, जो या तो बहुत चमकदार हो या गुणवान हो या हुनरमंद इन्सान हो। लेकिन वो आकर्षण दर्शनीय होता है, सुखकारी होता है, बस देखने का ही मन करता है। पर बड़ी विकट परिस्थिति ये है कि सभी लोग आकर्षित होते हैं, आकर्षित करने वाला बनने की हिम्मत नहीं रखते।

भाद्रपद मास के अष्टमी को एक दिव्यात्मा का जन्म जगजाहिर है। अब प्रश्न उठता है कि वह इसी मास में क्यों पैदा होता है? वसंत ऋतु का पूरा होना और उसके कुछ मास के बाद कृष्ण का जन्म होना, इसका कोई मनोवैज्ञानिक सरोकार हो सकता है! जैसे ही हम आनंद की अवस्था में होते हैं और वो जब बिल्कुल चरम पर होती है, तो सभी हमसे आकर्षित होने लग जाते हैं, लेकिन कृष्ण के जन्म से पहले बहुत सारी बातों का सामना करना पड़ता है, ऐसा शास्त्रगत उल्लेख है। मनोवैज्ञानिक मान्यता के आधार से अगर हम देखें तो हिन्दी मास चैत से लेकर आषाढ़ तक भीषण गर्मी तथा उमस वाला होता है, उसके बाद की ठण्डक हमें सुकून प्रदान करती है। वैसे ही हम सभी को गर्मी व उमस अर्थात् अति विकट परिस्थितियों को सहन कर उस अवस्था तक पहुँचना होता है। सहन करते-करते जब हम सहनशील बन जाते हैं, उसका स्वरूप बन जाते हैं तब हम उस आनंद की स्थिति को प्राप्त करते हैं। आनंद की तरंगें हमसे जहाँ भी जाती हैं, उससे सभी आनंदित महसूस करते हैं और कहने लग जाते हैं कि आप ही हमारे इष्ट हैं, आप ही फरिश्ते हैं क्योंकि आप आनंदित हैं।

इसका अर्थ यह हुआ कि कृष्ण का जन्म आनंद का दूसरा नाम है। इसलिए कृष्ण के जन्म के समय बारिश, आंधी, तूफान, बिजली को कड़कते हुए दिखाया गया है, परंतु उसमें भी वो मुस्कुराता है। आप सभी ने धारावाहिकों में ये दृश्य तो देखा ही होगा जिसमें उनके पांव के स्पर्श व चुम्बन मात्र से प्रकृति का जल तत्व बिल्कुल शांत व शीतल हो जाता है। स्वयं शेषनाग, जिनके लिए कहा जाता है कि उन्होंने धरती को अपने सिर पर उठाया है ऐसी मान्यता है, ने स्वयं उनकी रक्षा की। अब यहाँ धरती से जुड़ने का मतलब है कि देह का अभिमान उसने अपने सिर पर उठा रखा था, अर्थात् काम विकार को जीत लेने के बाद वही शुभकामना के रूप में रक्षा-कवच बन हमारी रक्षा करने लग जाता है। बिजली के कड़कने का अर्थ, अग्नि तत्व शांत होने से पहले और तेज़ प्रहार करता है अर्थात् भभकता है, लेकिन बाद में वही अग्नि तत्व शांत होकर उस अंधेरी रात में रोशनी दिखाने का काम करता है। पवन देव अर्थात् वायु तत्व हमारे गति को बढ़ा देता है और आराम से हमारे कदम गोकुल (गो अर्थात् स्वर्ग) और (कुल अर्थात् घराना) में पहुँच जाते हैं, अर्थात् हम सारे स्वर्ग अर्थात् स्व के सार में पहुँच जाते हैं और आनंद की चरम् अवस्था को प्राप्त करते हैं। उसी का मिसाल है कि कृष्ण चैन की बांसुरी बजाने लग जाते हैं।

कृष्ण हम सभी की एक मानसिक उपज है। यदि हम सभी को आकर्षित करने वाला बनना है तो हमें भी तपना और जलना होगा, सहन करना होगा उन सभी परिस्थितियों को जो आती हैं और आने वाली हैं। आपका उपहास होगा, लोग हसेंगे, कलंक लगायेंगे, परन्तु यदि चमकदार बनना है तो घिसना ही होगा, मरना ही होगा उन सभी बातों से जो हमें अपनी तरफ सकारात्मक या नकारात्मक तरीके से खींचती हैं। आप बस करीब हैं और यदि और करीब जाना चाहते हैं उस जन्नती इन्सान के तो थोड़ा सा और प्रयास करिये, और वो प्रयास ऐसा हो जो आपको स्वर्ग का प्रवासी बना दे.....तभी सच्ची-सच्ची आप कृष्ण जन्माष्टमी मना पायेंगे।

'मैं' को विसर्जित करें, शांति मिलेगी

क्या आप जानते हैं कि कुछ लोग आपको क्रोध में डुबो देने के प्रयास में लगे रहते हैं। यह घटना घर और बाहर दोनों में घटती है। आपके व्यावसायिक स्थल पर लोग आपको इरीटेट करें यह सामान्य बात है, लेकिन ऐसी घटनाएं घरों में भी होने लगती हैं। आपके परिवार के सदस्य आपको गुस्सा करने के लिए उकसाते हैं। सावधान रहिए, दूसरों के द्वारा संचालित और प्रेरित क्रोध अपने ऊपर न आने दीजिए, क्योंकि यह आपके व्यक्तित्व को असंतुलित कर जाता है। सामने वाले इसका फायदा उठाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि जब तक आप मजबूत हैं आपको पराजित नहीं किया जा सकता, लेकिन जैसे ही आप गुस्से में आए कि आप उनको फायदा पहुंचाना शुरु कर रहे होते हैं। आपको लड़खड़ाता देखकर उनको आगे निकलने का मौका मिल जाएगा। पहली बात तो यह है कि गुस्सा करिए ही मत और यदि क्रोध आ ही जाए, तो कोशिश करें कि उसे प्रत्यक्ष रूप से प्रकट न करें, हालांकि दबाने में नुकसान है। पर कभी-कभी दर्शाने में ज़्यादा हानि होती है। लोग आपको उकसाने का काम करते ही रहेंगे और इसीलिए आज अधिकांश लोग अशांति के प्लेटफॉर्म से ही काम करते हैं। शांति से काम करने वाले कम लोग हैं। बाहर तो शोर होता ही है पर अशांति के कारण भीतर भी भारी उपद्रव चलने लगता है। क्रोध की शुरुआत होती है 'मैं' से। जब भी कोई काम करें 'मैं' को विसर्जित करें और परमशक्ति से जुड़ जाएं। परमात्मा से कहें, 'आप करा रहे हैं तो मैं कर रहा हूँ।' बस, यहीं से 'मैं' गिरेगा और आप क्रोध से बचते हुए पूर्ण शांति के साथ काम कर पाएंगे।

नैनीताल। डी.एम. अक्षत गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वीणा।

नागपुर। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रजनी ।

राँची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला।

देहरादून। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री हरीश रावत को राखी बांधते हुए ब्र.कु.मंजु।

दिल्ली-पाण्डव भवन। ब्रिगेडियर निश्चय राउत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पा।

कोटा। कलेक्टर जोगाराम को राखी बांधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. ज्योति।

दार्जिलिंग। विधायक त्रिलोकचंद देवान को राखी बांधते हुए ब्र.कु. मुना। साथ हैं ब्र.कु. कविता।

काठमाण्डू-नेपाल। रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर नेपाल के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. रामवरण यादव को राखी बांधते हुए ब्र.कु. राज,निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल।

दिल्ली-छत्तरपुर। चौधरी कँवर सिंह तंवर के बी.जे.पी. सांसद बनने पर गुलदस्ता देकर अभिनंदन करते हुए ब्र.कु. अनीता व ब्र.कु. दिलीप।

डिबरुगढ़। सेंट्रल जेल में आयोजित 'रिफार्मेशन थ्रू राजयोगा मेडिटेशन' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. बिधान। साथ हैं ब्र.कु. बिनीता, असिस्टेंट जेलर,डिबरुगढ़ तथा अन्य।

फरीदाबाद-से.21। इंडस्ट्रियल कंपनी के मैनेजर मनोज बत्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु तथा ब्र.कु. प्रीति।

नांगल डैम। नेशनल फर्टिलाइज़र्स लि. की चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर नीरू अबरोल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीमा। साथ हैं टेक्निकल डायरेक्टर एम. सागर मैथ्यूज़ तथा ब्र.कु. रश्मि।

अमरेली। 'रक्त दान शिविर' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ. वीरेन्द्र, डॉ. शिवेन्द्र, पुलिस इन्सपेक्टर गढ़वी जी, प्रो. चुडासमा व ब्र.कु. गीता।

अखाद्य वस्तुएं और उनका शरीर पर प्रभाव

फैक्ट्री में बना नमक (Salt) भयंकर रोगों का कारण यह सफेद ज़हर है। इसकी जगह सेंधा नमक या काला नमक इस्तेमाल कर सकते हैं।

एलोपैथी के मतानुसार नमक को शरीर के लिये ही अति अनिवार्य पदार्थ गिना जाता है। साथ ही मलोत्सर्ग करने वाले अंगों (जैसे चमड़ी, मूत्रपिंड, फेफड़े आदि) के रोगों में एलोपैथी नमक को निषिध गिनती है और मानती है कि चमड़ी, मूत्रपिंड, फेफड़े आदि पर उसका घातक प्रभाव पड़ता है। इन अंगों के विकृत हो जाने के बाद नमक हानिकारक है - यह कहकर उसको बंद करने को क्यों कहा जाता है - यह समझ में नहीं आता। यदि वह नुकसानकारक ही है तो शुरुआत में ही उसके उपयोग को रोकना चाहिए।

नमक से जठर की पाचन क्रिया मन्द पड़ती है। सन् 1900 में वैज्ञानिक लिनोसियरे ने प्रयोगों से सिद्ध किया है कि जठर के पाचक

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

ब्र.कु. ललित शांतिवन

रस के एक हज़ार भाग के साथ तीन भाग नमक के मिले तो प्रोटीन का पाचन इतना कम हो जाता है, जितना चालीस-पचास प्रतिशत पेप्सिन (प्रोटीन को पचाने वाला पाचक रस) कम करने से होता है। इतना नमक तो हम सामान्यतया उपयोग में लेते ही हैं। ग्रंथियों से जो पाचक रस झरता है उसपर नमक का हानिकारक असर होने से पाचन प्रक्रिया पर खराब प्रभाव पड़ता है।

नमक वाला आहार लिया जाए और उसके साथ अधिक पानी पीया जाए तो बहुमूत्र का रोग हो जाता है और रक्त में पानी का प्रमाण बढ़ जाता है। मूत्र की मात्रा कम होती है, पर बार-बार लघुशंका के लिए जाना पड़ता है क्योंकि नमक के कारण मूत्रतंत्र के विशेष भाग को हानि पहुँचती है।

लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले डॉ. सिल्विस्टर ग्राहम (जो प्राकृतिक चिकित्सा केआद्य प्रणेताओं में से एक है) ने लोगों को यह कहकर सावधान किया कि पिछले आठ वर्षों के विशेष परीक्षणों के बाद मैं इस बात पर विषेश भार देता हूँ कि आहार में नमक का उपयोग मानव शरीर में विशेषकर कैंसर तथा ग्रंथियों के दूसरे रोगों को उत्तेजित करताहै।

चिन्तामणी की सुकना बहन, उम्र-40 वर्ष ने स्वर्णिम आहार पद्धति का प्रयोग किया जिससे उनका घुटनों का दर्द कम हो गया, बचपन से सिरदर्द रहता था वह बन्द हो गया, वेरीकोज़ वेन (नसें फूल जाना) ठीक हो गई, हिमोग्लोबिन एवं कैल्शियम कम था वह बढ़ गया, स्मृतिशक्ति बढ़ी, गहरी नींद आने लगी। तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज सेमु क्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

अपेक्षाओं से हटकर करें अपनी बातें शेयर

प्रश्न:- अगर नल में पानी नहीं आया या ड्राइवर समय पर नहीं पहुंचा तो हमारी पहली जो प्रतिक्रिया होती है वो होती है कि हम स्वयं ही अशांत हो जाते हैं।

उत्तर:- क्योंकि आप सबसे अपेक्षा रख रहे हो। आपकी बहुत सारी अपेक्षायें हैं, उनमें एक अपेक्षा और जोड़ दो कि चाहे कुछ भी हो जाये पहले मुझे ठीक रहना है।

प्रश्न:- इसे कैसे याद रखें?

उत्तर:- धीरे-धीरे यह आपके बिलीफ सिस्टम में सेट हो जायेगा क्योंकि यह हमारे पुराने बिलीफ सिस्टम को रिप्लेस कर रहा है। तो पहले मुझे किसका ध्यान रखना है? पहले मुझे अपने आपका ध्यान रखना है और अपने बिलीफ सिस्टम को चेक करना है कि दूसरे मेरे अनुसार करने वाले नहीं हैं, चलने वाले नहीं हैं, व्यवहार करने वाले नहीं हैं। ये हमें समझना होगा।

प्रश्न:- कभी भी, कुछ भी हो सकता है। इसका मतलब है कि जैसे ही वो परिस्थिति आती है तो हमारा वह बिलीफ सिस्टम हमारे माइंड के स्क्रीन पर पॉप-अप करने लगता है कि मैं स्टेबल हूँ।

उत्तर:- क्योंकि होता क्या है, अपेक्षा रखना माना क्या मैं अपनी सोच के अनुसार अपेक्षायें रखती हूँ? अपेक्षायें मेरी एक पर्टीकुलर सोच है, मेरा एक पर्टीकुलर बिलीफ सिस्टम है और मैं समझती हूँ कि सब लोगों को उसी बिलीफ सिस्टम से चलना चाहिए क्योंकि वो बिलीफ सिस्टम ठीक है, यह संभव है? यह कैसे हो सकता है?

हम असंभव चीज़ को स्वीकार कर लेते हैं फिर जब वो पूरा नहीं होती है तब हम अशांत हो जाते हैं और जैसे ही हमारी अपेक्षायें पूरी नहीं होतीं, फिर हम अशांत हो जाते हैं, फिर हम जजमेंटल होने लगते हैं। फिर हमारे मन में बहुत सारी बातें इकट्ठी हो जाती हैं। मैंने आपसे ये उम्मीद रखी थी कि आप मुझसे अच्छी तरह से बात करेंगे लेकिन आपने नहीं की तो इसके कई कारण हो सकते हैं। एक तो कि आज आपका मूड ठीक नहीं है या आज आपका मुझसे बात करने का मन नहीं होगा और दूसरा कि आपको मेरे बारे में किसी ने कुछ कहा होगा। फिर मैं आपके प्रति जजमेंटल, आपके प्रति दोषग्राही हो जाती हूँ फिर वो मेरे मन तक नहीं रहेगा वाणी में आयेगा, फिर मैं और लोगों को बोलूंगी।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्न:- जब तक उसका रिज़ल्ट निकल नहीं आता, जब तक मैं कोई निर्णय पास नहीं कर दूंगी, तब तक वो थॉट मेरे साथ चलता रहेगा।

उत्तर:- क्योंकि हमने जजमेंट क्या पास करनी है, मेरा बिलीफ ये है, आपने उस बिलीफ को पालन नहीं किया तो हमें जजमेंट एक ही पास करनी है और वो ये कि आप गलत हैं। वो तो मुझे पहले से ही पता था। मुझे जजमेंट सिर्फ यही पास करना है कि मैं सही हूँ, दूसरे गलत हैं। यही तो हम सारा दिन कर रहे हैं। जैसे आप बोल रहे हो वो गलत है, जैसा आप काम कर रहे हो वो गलत है।

हम यह स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं होते हैं कि हरेक का काम करने का अपना-अपना तरीका है, अपनी-अपनी अवस्था है, अपनी-अपनी कार्यकुशलता है, जिम्मेवारी से काम करने का अपना स्तर है। जब हम जिम्मेवारी को अपेक्षाओं के साथ जोड़ते हैं तब वह कई बार हमारी वैल्यूज़ के लिए भी एक समस्या बन जाती है। मान लो ऑफिस में एक व्यक्ति बहुत ही जिम्मेवारी से काम करता है, दिन-रात काम करता है। जिम्मेवारी से काम करना उसकी वैल्यू है, ईमानदारी उसकी वैल्यू है, हमेशा सच बोलता है कभी झूठ नहीं बोलता है। लेकिन फिर वो दूसरे से ये अपेक्षा रखता है कि सब लोग ऐसे ही होंगे। यदि कोई उतनी जिम्मेवारी से, उतनी ईमानदारी से व्यवहार नहीं करता है तो उसकी वही वैल्यू उसके लिए अशांति का कारण बन जाती है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की सोच अलग-अलग होती है।

अपेक्षा अर्थात् जैसे हम हैं, जैसी हमारी सोच है, क्योंकि जैसे ही आप अशांत होते हैं तो चेक करें कि आज आप किससे क्या अपेक्षा कर रहे थे।

यदि कोई बात आपको सही लगती है तो आप दूसरों के साथ शेयर करें, बच्चे के साथ शेयर करें, लेकिन सिर्फ अपने आपको ये याद दिला दें कि अगर वो पूरा नहीं कर पायेगा तो मैं दु:खी नहीं होऊंगी। धीरे-धीरे आपको दूसरे लोग अच्छे लगने लगेंगे क्योंकि पहले आपने उन्हें स्वीकार किया। जैसे ही हम उनको स्वीकार कर लेंगे तो धीरे-धीरे वो भी हमें स्वीकार कर लेंगे। वो जो बात हम उन्हें कह रहे हैं दूसरे को स्वीकार करना माना उसको सशक्त करना।

स्वीकृति की एनर्जी देने से उनके अंदर वो ताकत आ जाती है जिससे वो अच्छा परफॉरमेंस दे सकते हैं। अपेक्षाओं को एकदम से छोड़ देना यह बहुत कठिन है लेकिन ये तो ध्यान रख सकते हैं कि मुझे अशांत नहीं होना है। इससे पहले मुझे अपनी अपेक्षाओं को पूरी करनी है।

- क्रमश:

आज़ादी...?

- ब्र.कु. निधि,सर्वोदय नगर,कानपुर

देश को स्वतंत्रता मिले आधा दशक से भी ज़्यादा का समय हो चुका है, पर क्या सही मायनों में हम आज़द हुए हैं। आज भी भारत के 76 प्रतिशत लोग भुखमरी और बदहाली का जीवन जीने को मजबूर हैं। सरकार व प्रशासन सालों से केवल खोखले एवं झूठे वायदे करते आए हैं। आज़ादी के इतने वर्ष बीत जाने पश्चात् भी न ही गरीबी दूर हुई न बेरोज़गारी। कालाबाज़ारी, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, अनैतिकता आदि हमारे संस्कारों में शामिल हो गए हैं। कमर-तोड़ महंगाई से जनता मर रही है। लेकिन शासकों के पास इन सबके लिए कोई पुख्ता योजनाएँ नहीं हैं। दिन ब दिन अमीर होते देश में आम आदमी इस महंगाई के दौर में समान्य ज़रूरतें पूरी करने में हारता नज़र आ रहा है। यह हमारे लिए आत्म-मंथन का समय है। अंग्रेजी साहित्यकार मार्क दुथेन ने कहा है कि ''भारत आदम संस्कृति की जननी है, इसानी भाषा का जन्मदाता, इतिहास की माँ, परंपराओं की परदादी। हमारी बेहद बेशकीमती व उपयोगी वस्तुएँ इस भूमि में संजोई हुई हैं।'' स्वतंत्रता शब्द दो शब्दों से बना है 'स्व' और 'तंत्र'। 'स्व' का अर्थ है स्वयं से तथा 'तंत्र' अर्थात् व्यवस्था। तात्पर्य है अपने आप को जानने व पहचानने से।

क्या है आम आदमी के लिए स्वतंत्रता?

आज ही के दिन 15 अगस्त,1947 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लालकिले के प्राचीर से आज़ादी का उद्घोष किया और कहा, ''अर्धरात्रि को जब विश्व सोएगा तब हिन्दुस्तान स्वतंत्रता व ज़िंदगी का आनंद लेगा'' और अंत में कहा कि अति प्राचीन, अखण्ड एवं चिर यौवन भारत भूमि को हम नमन करते हैं, वही देश जो स्वयं की पुनः खोज करता है। प्रश्न यह है कि हम आज़ादी को क्यों इतना महत्व देते हैं? क्या वास्तविक मायने हैं भारत की जनता के लिए स्वतंत्रता के। आज़ाद होना मतलब स्वयं की संभाल करना, उस मातृभूमि के मूल्यों को बनाए रखना जिसने हमें पाला-पोसा, अपनी सांस्कृतिक विरासत व जड़ों से जुड़े रहना और ऐसे नियम-कायदे बनाना जो हमें जीवन में आगे बढ़ाएँ। स्वतंत्रता दिवस पर अपनी भारत माता को गौरवांवित करने हेतु कार्य करना चाहिए जो हमारा एक अविस्मरणीय इतिहास रहा है। साथ ही बुद्धिजीवि वर्ग से दोस्ती करके तथा देश के जो मूल्यवान संसाधन हैं, उनका सदुपयोग करके आम जन अपना जीवन स्तर सुधार सकते हैं और अपना श्रेष्ठ योगदान समाज के लिए कर सकते हैं। इसी संदर्भ में गर्ल्स होस्टल संचालक कांता बहन कहती हैं कि ''विचारों की पवित्रता सच्ची आज़ादी का परिचारक है। स्वतंत्रता मिलने पर उसका उपयोग कर उपलब्धियाँ हासिल करनी चाहिए। हम भी जीवन अच्छे से जीएँ व दूसरों के भी सहयोगी बनें।'' लेकिन निरंतर विकसित होते भारत की आम जनता अपनी हालत पर आंसू बहाने को मजबूर है। इसलिए आज आम जन स्वतंत्र देश में रहकर पराधीन एवं पराजित महसूस करता है। आज़ादी के क्या मूल रूप से मायने होने चाहिए, वह भूल गया है। ऐसे में धूमिल की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं, ''क्या आज़ादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है, जिन्हें एक पहिया ढ़ोता है''।

युवाओं के लिए क्या है आज़ादी?

आज का भारतीय युवा अपने अनुसार जीवन जीने को ही आज़ादी मानता है। वह दो वर्गों में बँटा दिखाई देता है। एक तरफ कुछ कर गुज़रने की उसमें बेहतरीन संभावनाएँ नज़र आती है चाहे कॉर्पोरेट सेक्टर हो या राजनीति, फिल्म इंडस्ट्री इत्यादि हर जगह युवाओं ने अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज़ कराई है। वहीं दूसरी तरफ वह स्वतंत्रता के नए और कुत्सित अर्थ को ही असली आज़ादी मान बैठा है। फास्ट फूड खाना, डिस्को थेक जाना, सेक्स, हिंसा, अश्लील कपड़े पहनना इत्यादि को भी स्वतंत्रता की परिभाषा मान बैठे हैं बहुत से युवा। जो किसी भी काल में आज़ादी के मायने नहीं होते। वर्तमान फिल्मों और टी.वी. के बेतुके शोज़ ने युवा वर्ग को दिग्भ्रमित किया है। कम मेहनत व कम समय में करोड़पति बनने का झूठा ख्वाब दिखाकर उनकी इच्छाओं को हवा दी जा रही है। यथार्थ में जब वह पूरी नहीं होती तो युवकों की बौखलाहट कुंठा में बदल जाती है। अधिकारों की आज़ादी के नाम पर युवा फिर गलत रास्ते पर चलते हैं।

महिलाओं के लिए क्या है स्वतंत्र होना?

आज जब सारा विश्व अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मना रहा है और देश में भी नारी सशक्तिकरण की बातें होती रहती हैं, संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का बिल पड़ा है, ऐसे में प्रश्न उठता है कि

''क्या आज़ादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है, जिन्हें एक पहिया ढ़ोता है''।

क्या भारतीय महिलाएं सही मायने में स्वतंत्र व पूर्ण रूप से आज़ाद हैं। सिक्के का एक पहलू यह है कि भारतीय नारी ने कला से लेकर विज्ञान के क्षेत्र जैसे नासा की सुनीता विलियम, पेप्सिको की चेयरपर्सन इंद्रा नुई, बायोटेक की सुनीता राव, वर्तमान मानव संसाधन मंत्री एवं एक्टर स्मृति ईरानी, बॉलीवुड अदाकारा माधुरी दीक्षित, टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्ज़ा इत्यादि की काबिलियत का डंका सारी दुनिया में पिट रहा है। देश की प्रगति व रक्षा-क्षेत्र में भी महिलाओं के योगदान को झुठलाया नहीं जा सकता। परंतु सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि आज भी लड़कियों तथा महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा, यौन-उत्पीड़न, बलात्कार, पढ़ाने-लिखाने पर रोक-टोक, जलाना, चरित्र पर दोषारोपण करना, मनहूस कहना, कन्या भ्रूण हत्या आदि घिनौने कृत्य खुले आम हो रहे हैं। आज भी शिक्षित परिवार एक ही पुत्री या पुत्रियाँ होने पर यह कहते हुए सुने जाते हैं कि ''अब बेटी ही हमारा बेटा है'', अर्थात् बेटा को ही ऊँच माना जाता है। लड़की के जीवन से जुड़े अधिकांश निर्णय अब भी माँ-बाप ही लेते हैं। किसी ऑफिस में उच्च पद पर आसीन महिला के नीचे कार्य करने वाले पुरुष सहयोगी क्यों उसे पूर्ण सहयोग नहीं देते? सामाजिक बंधनों, मान्यताओं व सोच के स्तर पर नारी जाति आज भी स्वतंत्र नहीं है। भले ही वह घर हो या बाहर, हर जगह महिलाओं को कमज़ोर साबित करने व बंदिश लगाने वालों की कमी नहीं है। आज़ादी के असली मायने तो तब समझ में आते हैं जब समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं को स्वेच्छा से कार्य में भागीदारी का अधिकार मिले तथा हर तबके की स्त्रियों को एक जैसी सुविधाएं तथा अधिकार हासिल हों। संगीता बहन स्वतंत्रता दिवस को महिला स्वतंत्रता से जोड़कर देखती हैं। उनका कहना है कि जब से शिव बाबा/परमात्मा शिव की बनी हूँ, मैं आत्म-निर्भर हो गई हूँ। अब अपने कार्य स्वयं कर सकती हूँ, दूसरों की तरह मैं भी अपनी शक्तियों का उपयोग करना सीख गई हूँ।'' यही सोच अपनाकर अगर हर देशवासी जीवन जीए तो भारत को पूर्ण स्वतंत्र साम्राज्य बनने से कोई नहीं रोक सकता।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि घर-गृहस्थी का काम करने की ज़िम्मेदारी पुरुष और महिला दोनों की है। 90 प्रतिशत आधुनिक और आज़ाद महिलाएं घर पहुंचते ही रसोई में घुस जाती हैं, मगर 2 प्रतिशत आम पुरुष भी ऐसा नहीं करते। परंतु आज आज़ादी के नाम पर औरतों का भड़काऊ कपड़े पहनना, उत्तेजक भाव-भंगिमा और मेक-अप कर पर-पुरुषों को रिझाना, स्ट्रिपर्स नाइट का आयोजन, अपनी संस्कृति-सभ्यता से अलगाव एवं टूटते-बिखड़ते परिवार, इन सब में भारतीय महिलाओं का भी दोष है। आज़ादी या स्वतंत्रता के सही मायने अच्छे संस्कारों, उपयुक्त सिद्धांतों व उच्च मूल्यों के साथ जीवन जीना और परिवर्तन लाना है न कि मनमानी, उच्छृंखलता आज़ादी का पैमाना हो सकती है।

कैसी हो सच्ची आज़ादी?

आज़ाद होने का सीधा अर्थ है सबसे पहले खुद की देखभाल करना व खुश रहना, अपने मूल्यों और संस्कार जो हमें धरोहर में मिले हैं, को सहेजकर रखना,अपनी गहरी जड़ों तथा विरासत से सदा जुड़े रहना, जीवन में आगे बढ़ने हेतु एवं बदलाव लाने हेतु ईमानदारी से प्रयासरत रहना। आज़ादी या खुली हवा में सांस लेने के सही मायने हम तभी समझ पाएंगे जब हर भारतीय शासकों तथा व्यवस्था की कमी-कमज़ोरियों का हर समय रोना न रोकर, देश और इसकी संपदा को खुशहाल व संपन्न बनाने में सम्पूर्ण योगदान दें। तिरंगा फहराने के पीछे भी यही भावना निहित है कि देशवासी भाईचारे, प्रेम व दूसरों और स्वयं के लिए शुभ संकल्पों के साथ स्वछंद जीवन जीएं। तिरंगे के मध्य में मौजूद सफेद रंग उस रोशनी को दर्शाता है जो हमें सत्य पथ पर चलने की राह दिखाता है। केन्द्र में इंगित अशोक चक्र ''धर्म-चक्र'' का प्रतीक है जो सत्यता, धर्म तथा मूल्यों से भरपूर जीवन जीने की प्रेरणा देता है। तिरंगे में मौजूद नीली तीलियों का पहिया शांतिप्रिय बदलाव का द्योतक है। वहीं तिरंगे का केसरिया रंग शासकों को सत्ता से अनासक्त व विरक्त रहने का संदेश देता है। जीवन में अच्छे आचार-विचार, श्रेष्ठ मूल्य एवं शुभ कामनाएं सभी के लिए सीखकर ही सच्चे रूप में हम आज़ादी की ठंडी बयार का अनुभव कर सकते हैं।

इन्दौर-ओमशांति भवन। लाकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनिता,ब्र.कु.शंकुतला।

मेरठ-दिल्ली रोड। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन के पश्चात् समूह चित्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कोरियोग्राफर पं.पुलकित मिश्रा, ब्र.कु. श्वेता तथा बच्चे।

नाभा-पंजाब। ब्र.कु. अशोक के तपस्वी जीवन के 25 वर्ष पूरे होने पर उनका सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. गुलशन, रमेश मोदी, जीवन शाही, रमेश गर्ग तथा शहर के गणमान्य नागरिक।

अहमदाबाद। साबरमती सेंट्रल जेल में बंदीवान भाई-बहनों के लिए आयोजित मेडिकल कैम्प का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जेल अधीक्षक आर.एस. भगोरा, डॉ. मेहुल शाह, डॉ. मुकेश पटेल, प्रो. नीता पटेल, डॉ. चैतन्य पटेल तथा अन्य।

पावीजेतपुर-गुज.। वैष्णव सम्प्रदाय के धर्मगुरु द्वारकेश जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मोनिका, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

देहरा। रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डी.एफ.ओ. जय चंद कटोच, ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. शिवानी तथा स्टाफ।

आध्यात्मिक प्रज्ञा.....

-ब्र.कु.जगदीशचंद्र हसीजा

फरूखाबाद। गंगा जागरण अभियान का स्वागत करते हुए ब्र.कु.मंजु। साथ हैं गुरु वचन सिंह ग्रंथी साहब, सूफी संत पप्पन मिया, ब्र.कु. रीता तथा अन्य।

जमशेदपुर। 'सर्वधर्म सद्भावना सम्मेलन' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रामनाथ,माउण्ट आबू, पारसी फायर टेम्पल के पेसी वाडिया, गायत्री परिवार के श्री प्रभाकर जी, पंजाबी आर्य समाज के पूरन जी तथा समाजसेवी लक्ष्मी निधि।

दिल्ली-डेरावल नगर। 'नव चेतना बाल व्यक्तित्व विकास' शिविर के समापन अवसर पर समूह चित्र में ब्र.कु. लता, प्रिन्सीपल श्रीमती प्रभा बजाज,राजकीय उच्च विद्यालय, डॉ. ऊषा किरण तथा बच्चे।

दिल्ली-मजलिस पार्क। 'नारी सुरक्षा हमारी सुरक्षा' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए द्वारका विद्या भारती सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल की प्रिन्सीपल श्रीमती ममता गुप्ता। साथ हैं निगम पार्षद नीलम बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. राजकुमारी, बैंक मैनेजर श्रीमती पूनम मल्होत्रा, डायरेक्टर अजीत शर्मा, वकील अहमद अली,रिपोर्टर।

दिल्ली-पीतमपुरा। 'नव चेतना बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए स्कूल डायरेक्टर सुरेश जी, प्रॉपर्टी डीलर मुकेश जी, ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. कनिका।

नवी मुम्बई-वाशी। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. रमन राठोड़, इंदिरा गांधी इंजीनियरिंग कॉलेज के मैनेजिंग ट्रस्टी सुनील जाधव, ब्र.कु. शीला, गुरमीत कौर मोंगा, शशीधर मरार, राजीव सिंह, ब्र.कु. मीरा तथा बच्चे।

आध्यात्मिक प्रज्ञा हमारी बुद्धि की वह स्थिति, गुणवत्ता अथवा क्षमता है जिससे कि हम झट से किसी बात को ठीक से समझ लेते हैं, व्यक्ति को भांप लेते हैं, परिस्थिति का अवलोकन कर सकते हैं और होने वाले परिणामों की झलक पा सकते हैं। यह हमारे अभ्यासों तथा शुभ प्रयत्नों का वह फल है जो विकसित होकर हमें यह योग्यता प्रदान करता है कि हमारी मनोस्थिति एकरस बनी रहे और हम निन्दा-स्तुति, घृणा-द्वेष, हानि-लाभ, जय-पराजय और विघ्नों-तूफानों में रहते हुए भी एक निर्विघ्न तथा अचल स्थिति में रह सकें, ठीक निर्णय कर सकें, परिस्थिति का विश्लेषण कर सकें, मूल्यांकन कर सकें और आत्म-विश्वास से अपने इरादों का क्रियान्वयन कर सकें तथा अनेक प्रकार के प्रलोभन, उत्तेजनायें, उकसाहटें सामने आने पर भी हम अपनी नैतिकता में दृढ़ बने रहें। यह बुद्धि की प्रफुल्लित अवस्था है जिसमें दैवी गुणों का विकास हुआ होता है और मनुष्य भय, चिन्ता तथा दूसरों के दबावों में भी निर्द्वन्द्व होकर कार्यरत रहता है। ऐसी बुद्धि वाले व्यक्ति को नकारात्मक विचार नहीं आते और वह किसी का बुरा नहीं सोचता। वह कोरे स्वार्थ से ऊपर उठकर रहता है और भलाई के पथ पर मजबूत कदम से आगे बढ़ता है।

आध्यात्मिक ग्रंथों में आध्यात्मिक प्रज्ञावान मनुष्य की उपमा हंस से की गई है। जैसे हंस मोती चुगता है और कंकड़-पत्थर छोड़ देता है, वैसे ही दिव्य प्रज्ञा वाला व्यक्ति शुभ मनोरथों, भावों और विचारों ही को ले लेता है और व्यर्थ से सदा बचकर रहता है। उसका उत्साह अदम्य होता है। उसकी उपमा कछुए से भी की गई है। जैसे कछुआ अपना काम करने के बाद अपनी इन्द्रियां समेट लेता है और अचल होकर पड़ा रहता है, वैसे ही रूहानियत की बुद्धि वाला व्यक्ति भी कर्म करने के बाद अपने विचारों और कर्मोंको समेट लेता है और अपने मन की गुफा में मग्न होकर प्रभु-प्रेम में विलीन होकर, आत्मरस के स्वाद में विभोर होकर आनंदित होता रहता है। उसका मन ही मानसरोवर होता है। उसका विचार ही गंगाजल होता है और वह उसमें डुबकियां लगाते हुए पावन-पुनीत बनकर समाधिस्थ हो जाता है। ''ऊँ नमः शिवाय, ऊँ नमः शिवाय''-इस मंत्र का आलाप करने की उसे आवश्यकता नहीं होती; वह इसके अर्थस्वरूप में स्थित होता है। वह उस परमात्मा रूपी साजन की सजनी बन अथवा उस मालिक का सेवक या बालक बन या उस पिता का पुत्र बन, शिक्षक का शिष्य बन या सखाभाव से द्रवित होकर उस अनुपम सखा का सखा बन गोया सर्व सम्बन्धों से उसी का होकर उसी के संग-संग होता है। वह इस संसार में रहते भी इससे उपराम अथवा न्यारा होता है। परमात्मा रूपी शमा पर वह पतंगे की तरह विचार-चक्र लगाता है। जैसे चकोर चाँद को देखकर बेतहाशा से ऊपर उसकी ओर उड़ जाता है, वैसे ही उसका चित्त रूपी चकोर उड़कर प्रभु की ओर जाता है।

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संस्थापक ने यह भी कहा है कि रूहानी बुद्धि वाले व्यक्ति के मन में कोई लौकिक कामना व इच्छा नहीं होती। वह जनहित के लिए, सबकी सेवा के लिए, प्रभु के प्रति समर्पित बुद्धि होता है। अन्यश्च, वह ट्रस्टी भाव से ही कार्यरत रहता है। वह कर्मयोगी होता है अर्थात् उसके हाथ कर्म में प्रवृत्त होने पर भी उसकी बुद्धि योगयुक्त होती है। वह राजा जनक के समान विदेही अवस्था में बना रहता है और कुशलता पूर्वक कर्म करता है। उसके जीवन में खुशी, उत्साह, सेवाभाव सदा बने रहते हैं। दूसरों के दुःख दूर करने के लिए और स्वयं पूर्णता तक पहुँचने के लिए उसका जीवन सादा और स्वभाव में दया, करुणा तथा वृत्ति में त्याग होता है।

मनुष्य की यह स्थिति तब होती है जब वह इस स्मृति में स्थित होने का अभ्यास करता है कि मैं एक आत्मा हूं, एक प्रकाश-कण हूं, ज्योति-बिन्दु हूं, अनादि हूं, अनश्वर हूं, शान्त हूं, अपनी आदिम अवस्था में शुद्ध हूं, परमपिता परमात्मा की अमर सन्तति हूं और इस संसार रूपी कर्मक्षेत्र पर दूर देश, जिसे 'परलोक' अथवा 'ब्रह्मलोक' कहते हैं, से इस विश्व नाटक में अपना पार्ट बजाने आया हूं। मुझे यहाँ कार्य करना है और फिर वापिस लौट जाना है...। इस प्रकार राजयोग के अभ्यास से मनुष्य की बुद्धि कुशाग्र, एकाग्र, सांकुश, अनुशासित, दिव्य, विशाल एवं प्रफुल्लित होती है। दैवी सम्पदा वाली यह बुद्धि ही रूहानियत वाली बुद्धि है। हम शुद्ध आहार, व्यवहार, विहार, आचार और राजयोग का अभ्यास करते हुए इस मेधा, बुद्धि अथवा प्रज्ञा को प्राप्त करते हैं जो सब प्रकार के भेद-भावों से और कलह-क्लेषों तथा संघर्षों से ऊंची उठी होती है।

चूंकि व्यक्तिगत एवं विश्व की सभी समस्याएं हमारी बुद्धि के नैतिकता-रहित, मन के अंकुश-रहित, भावावेगों के मर्यादा-रहित हो जाने के कारण से हैं, इसलिए आज ऐसी बुद्धि अथवा प्रज्ञा की ज़रूरत है। ऐसी बुद्धि होने पर अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, विज्ञान तथा तकनीकी, कलाओं तथा संरचनाओं, साहित्य तथा शिक्षा, प्रशासन तथा व्यवस्था, न्याय तथा विधि-विधान सभी को एक नयी दिशा मिलती है। इनमें नया उत्कर्ष होता है।

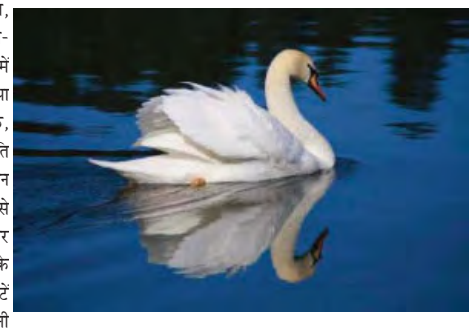

हरिद्वार। रक्षाबंधन पर्व पर हरिद्वार में संत संगोष्ठि का आयोजन किया गया। संगोष्ठि में पवित्रता के मूल्य और उनके द्वारा ही भारत का उत्थान होगा ये सभी एक स्वर से निष्कर्ष बिन्दु पर पहुँचे। ब्र.कु. प्रेमलता ने भारत को विश्वगुरु के रूप में ले जाने के लिए पवित्रता के मूल्य का होना अति आवश्यक बताया। बिना पवित्रता भारत को स्वर्णिम बनाया नहीं जा सकता। अपने व्यवहार व सम्बन्ध में पवित्रता एवं शुद्धता को अपनाकर ही हम सुख-शांति की कामना कर सकते हैं। आए हुए सभी संतों ने भी अपने अपने विचार रखे। इसके बाद सभी संत जनों को ब्र.कु. प्रेमलता ने राखी बांधी। तत्पश्चात् सभी को ईश्वरीय सौगात देकर कार्यक्रम की समाप्ति की गई।

ब्र.कु. प्रेमलता महामण्डलेश्वर दर्शनसिंह को राखी बांधते हुए ।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान–मैं शिव शक्ति हूँ।

मैं शिव की शक्ति हूँ... सदा शिव से कम्बाइंड हूं... शिव की सेवा अर्थ ही मैं इस धरा पर अवतरित हुई हूँ...।

योगाभ्यास- अ. फरिश्ता बनकर ऊपर आना और देवता बनकर नीचे साकार सृष्टि पर आना। यह अभ्यास दिन में अनेक बार करें।

ब. अपने सामने खूंटी पर टंगी हुई फरिश्ते व देवता की ड्रेस देखें और कभी फरिश्ते की चमकीली ड्रेस पहनकर उसी स्वरूप का अनुभव करें और करायें...।

धारणा- सर्व को सम्मान देना। ऐसे लोगों के नाम की सूची बनायें जिनके लिए आपके मन में सम्मान नहीं है। सम्मान न होने के कारण का पता लगायें और ज्ञान योगबल से उसका निवारण करते हुए, उनके प्रति अपनी भावनाओं को शुद्ध करें और व्यवहार में उन्हें सम्मान दें। याद रखें, दाता हमेशा बड़ा और महान होता है। इतिहास देने वाले को याद रखता है, लेने वाले को नहीं।

चिंतन- बाबा के द्वारा दी गई श्रीमतों की सूची बनायें। जैसे-रोज अमृतवेले उठकर याद की यात्रा में बैठना। रोज मुरली सुनना अर्थात् ज्ञानामृत पान करना। मुख से सदा ज्ञान-रत्न ही निकालना। कम, धीरे, मीठा और तोल कर बोलना। भोजन बाबा की याद में बनाना और खाना। रोज रात को अपना चार्ट लिखना या बाबा को अपना पोतामेल देना... आदि।

ध्यान दें- जो जितना श्रीमत का पालन करेंगे, उतना ही सर्व शक्तियां उनके आदेश का पालन करेंगी।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति- प्रिय आत्मन्! हम इस संसार के आधार हैं। हमारी सम्पूर्णता का प्रकाश ही इस जग से अज्ञान के अंधकार को दूर करेगा, धरा पर स्वर्ग लायेगा और जन-जन को मुक्ति-जीवनमुक्ति प्रदान करेगा। इतने बड़े कार्य के निमित्त हम आत्मायें व्यर्थ में अपना समय और संकल्प कैसे नष्ट कर सकते हैं?

स्वमान–मैं विघ्नविनाशक गणेश हूँ।

मैंने विघ्नों को नष्ट किया है तब तो विघ्न विनाशक गणेश के रूप में मेरा गायन और पूजन हो रहा है...।

योगाभ्यास- अ. भक्त आत्मायें विघ्नों से त्रस्त होकर मेरे पास आ रहे हैं... और मुझ विघ्न विनाशक गणेश के पास आते ही उनके विघ्न नष्ट होते जा रहे हैं। वे मुझसे सुख, शांति व आनंद का वरदान लेकर जा रहे हैं...।

चिन्तन- विघ्न क्या है और क्यों आते हैं? विघ्नों का निवारण कैसे करें? विघ्नों के समय अपनी स्मृति में रखने के लिए बाबा के पाँच महावाक्य लिखें।

धारणा- धैर्यता। विघ्नों के समय विचलित न हों। इधर-उधर मदद की गुहार करते भागते न फिरें। बल्कि धैर्यतापूर्वक ठण्डे दिमाग से उस पर विचार करें, आपको समाधान स्पष्ट दिखाई देगा।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति- अ. प्रिय साधकों! आपके या आपके संबंध-संपर्क में रहने वाली किसी आत्मा के ऊपर यदि कोई विघ्न आ गया हो तो आप इस स्वमान के साथ कि 'मैं विघ्न-विनाशक हूँ' रोज आधे घण्टे एक ही समय और एक ही स्थान पर बैठकर 21 दिन योग करें। आपके विघ्न दूर हो जायेंगे।

ब. कर्मक्षेत्र में जाने से पूर्व पाँच मिनट बाबा के कमरे में बैठकर बाबा से विजय का तिलक लें। इससे आपका हर कार्य बिना किसी विघ्न के खेल-खेल में पूरा हो जायेगा।

स. बाबा के महावाक्य हैं- सर्व विघ्नों का एक ही कारण है-बाप से कनेक्शन लूज़ होना। यदि बाप से कनेक्शन ठीक है तो विघ्न आ नहीं सकते। अतः हम सम्पूर्णता के पथ पर चलने वाले साधक सूक्ष्मता से स्वयं को चेक करें कि किसी गफलत या अवज्ञा के कारण हमारे बुद्धि का कनेक्शन बार-बार टूटता तो नहीं रहता? यदि कनेक्शन टूटा हुआ है तो आप बाबा के सामने बैठें, बाबा मदद करेंगे आपका टूटा हुआ कनेक्शन जोड़ने में।

कर्म को 'कर्त्तव्य'

- पेज 2 का शेष ...

दो कर्मचारी बातें कर रहे थे। एक कर्मचारी ने दूसरे से पूछा - मैंने तो मम्मी की मेडिकल चेक अप के लिए केजुअल छुट्टी लिया है? क्या आप भी छुट्टी पर हैं? दूसरे कर्मचारी ने कहा - येस, मैंने भी पापा के मेडिकल चेकअप के लिए छुट्टी ली है। लेकिन आपने मम्मी के मेडिकल चेकअप के लिए केजुअल छुट्टी ली है तो मम्मी का मेडिकल चेकअप कराया या नहीं?

प्रथम कर्मचारी ने कहा - मम्मी के चेकअप के लिए तो पापा भी हैं। पापा अभी हट्टे-कट्टे हैं। फिर मुझे जाने की क्या ज़रूरत है? लेकिन आपने अपने पापा के मेडिकल चेकअप का काम निपटाया या नहीं?

दूसरे कर्मचारी ने हंसते-हंसते कहा - यार आप और मैं दोनों एक ही जैसे हैं। मेरी मम्मी भी तंदरुस्त हैं इसलिए उस जवाबदारी का बोझ मैंने मम्मी पर लाद दिया। मम्मी पापा को लेकर दवाखाने गई है। अपने को तो छुट्टी से मतलब! केजुअल छुट्टी एक-एक कर भोगनेवाली वृत्ति व्यक्ति को ऐसी बहानेबाजी की ओर प्रेरित करती है। आजादी के बाद देश क्यों असाधारण प्रगति नहीं कर सका? कारण एक ही है, प्रजा और सरकार 'नागरिक धर्म' का कर्त्तव्य भुनाने में खरे नहीं उतर रहे हैं। कर्म या कर्त्तव्य को आनंदोत्सव मानने वाले व्यक्ति ही वंदनीय हो सकते हैं। आलसी साधु-संत या तर्कवादी राजनेता नहीं।

कर्म या कर्त्तव्य श्रद्धा, स्फूर्ति और आनंद पूर्वक किया नहीं जाता तो परिश्रम और प्रमाद उत्पन्न होता। काम में चित्त नहीं जगता और बोरीयत के कारण व्यक्ति क्रोधी बन जाता। परिणाम स्वरूप अशांति और अराजकता का सृजन होता है। काम के प्रति पलायनवादी व्यक्ति की एक खासियत यही होती है कि वे अलबेले होते है। काम न करने या नही होने के बचाव में खुद सारी शक्ति वेस्ट कर देते हैं। इतना ही नहीं निष्ठापूर्वक कर्त्तव्य अदा करने वालों की निंदा करने का 'कर्त्तव्य' व पूरी तरह से अदा करते है।

इस आलेख का भाव सार में यही हो सकता है कि आप कर्म को कर्म समझकर करते हैं या कर्त्तव्य निर्वहन से उपर उठकर उसे प्यार करते हैं। तभी उस कर्म का परिणाम सुकून दायक होगा। आज वर्तमान परिदृश्य इसी तरह का है। इसलिए उन सभी मनुष्यों के पास, जो इस तरह का विचार रखतें है उन सबके पास सम्बधों से लेकर स्थूल धन तक का अभाव है। क्योंकि वे परिणामात्मक कर्म करते है। उन्हें सिर्फ मतलब है, काम हमारा है ही नहीं बस हमें काम का बोझ उतारना है। इसलिए उन कर्मों की तरगें जिसे वो बोझ समझतें हैं वो उनके जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती हैं। गरीब हमेशा गरीब है क्योंकि वह सिर्फ और सिर्फ मेहनत करता है और मजबूरी से करता है। इसलिए सिर्फ बोझ उतारता है और कहता रहता है, क्या करूँ साहब पापी पेट का सवाल है। अब आप बताइए जब पेट ही पापी हो गया तो बचा ही क्या? क्या वो अमीर होगा कभी? खुश रहेगा कभी.... ज़रा सोचिए।

नाइजीरिया-लागोस। 'विषम परिस्थितियों में स्वयं को एकरस रखने की विधि' विषय पर प्रवचन के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. आत्मप्रकाश, ब्र.कु. रेवा तथा अन्य।

देहरादून। उत्तराखण्ड के गवर्नर अजीज़ कुरैसी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजु।

बैंगलुरु। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री माननीय के.सिद्दारमय्या को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पदमा। साथ हैं विधायक एन.एल. नरेन्द्र बाबू।

मुम्बई-विले पार्ले। परब कोहली,मॉडल,वी.जे. टेलिवीज़न तथा फिल्म एक्टर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. योगिनी।

गाज़ियाबाद। राखी के पावन पर्व पर संतोष यादव, उपाध्यक्ष,गाज़ियाबाद विकास प्राधिकरण को आत्म स्मृति का तिलक देने के पश्चात् राखी का महत्व बताते हुए ब्र.कु. राजेश। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

केशोद-गुज.। बी.आर.एस. कॉलेज में चार दिवसीय राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. रिद्धि, प्रो. पुरोहित साहेब, प्रो. गजेरा साहेब तथा कॉलेज के विद्यार्थीगण।

रानीखेत-हल्द्वानी। 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम के पश्चात् महिलाओं के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. नीलम।

पुणे। महाराष्ट्र के गवर्नर के.शंकरनारायणन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रूपा। साथ है ब्र.कु. दीपक तथा ब्र.कु. गीतिका।

यू.के.-वेलिंगबर्ग। 'आर्ट ऑफ पॉज़ीटिव थिंकिंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भारत भूषण।

काकीनाड़ा। रंगाराया मेडिकल कॉलेज में आयोजित 'व्यसन मुक्ति शिविर' के अंतर्गत आ.प्र. के हेल्थ मिनिस्टर कामिनेनी श्रीनिवास को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रजनी व ब्र.कु. गंगा।

मोहाली। पंजाब टेक्निकल युनिवर्सिटी में 'फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम' के अवसर पर ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. सुमन तथा ब्र.कु. पलविन्दर को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. जी.डी. गुप्ता,कॉलेज ऑफ फार्मेसी तथा अन्य।

उस्मानावाद। रोट्री क्लब तथा बार एसोसिएशन के नव निर्वाचित सदस्य रोट्री प्रेसीडेन्ट नितिन तावडे, सेक्रेट्री संजय गारजे, मराठावाड़ा ड्रगिस्ट एसोसिएशन के वाइस प्रेसीडेन्ट नारायण भंसाली, बार एसोसिएशन के प्रेसीडेन्ट रंगनाथ लोमटे का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुरेखा व ब्र.कु. वैजीनाथ।

पंढ़रपुर-महा.। 'आर्ट गैलरी' के शुभारंभ के दौरान दीप प्रज्वलन करते हुए ब्र.कु. संतोष,श्रेत्रीय संचालिका, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु. सोमप्रभा, ब्र.कु. उज्जवला, सुधाकरपत,पूर्व अध्यक्ष,महाराष्ट्र परिवहन, ब्र.कु. गोदावरी, विनायकराव पाटील तथा अन्य।

अर्जुन के निराशावादी होने का कारण क्या?

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

पहले अध्याय में मानव की समस्याओं को दर्शाया गया है, जैसे अर्जुन का विषाद और मानव की समस्या दर्शायी हुई है। दूसरे अध्याय में मुख्य मुद्दे उठाये गए हैं और उनके समाधान दिए गए हैं। तीसरे अध्याय से लेकर सत्रहवें अध्याय तक इन समाधानों का विस्तार किया गया है और अठारहवें अध्याय में इनका सारांश दिया गया है। इस तरह ये श्रीमद्भगवद्गीता के अठारह अध्याय हम सबके सामने हैं। वास्तव में यह अर्जुन और भगवान के बीच का एक संवाद है। जैसे हम सभी ने देखा कि हम सभी कौन हैं? अर्जुन हैं। जो अर्जन करने का भाव लिये हुए है। यह हमारा और परमात्मा के साथ का संवाद है कि कैसे हमने इस संसार को अत्याधिक दूषित और जटिल बना दिया है। हम इसे रहने लायक एक बेहतर विश्व भी बना सकते हैं। बशर्ते कि हर व्यक्ति अपने लिए यह निश्चय कर ले कि वह कहाँ जाना चाहता है? अपने लक्षित बिन्दु तक कैसे पहुंचना चाहता है। इस तरह से पहले अध्याय में जो विषाद की स्थिति, कुरुक्षेत्र के मैदान, युद्ध के मैदान का दृश्य है , उसके दो मुख्य पात्र हैं भगवान और अर्जुन। इनके साक्षी हैं युद्ध में भाग लेने वाले अक्षौणी सैनिक। दोनों सेनाओं के योद्धा के नाम की घोषणा के पश्चात् अर्जुन का हृदय निराशा में डूब जाता है। सोचने की बात है कि अर्जुन जैसा एक महावीर जिसने अनेकों युद्ध अकेले ही कई बार जीते थे। ऐसा भी नहीं है कि वह भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य का पहली बार सामना करने जा रहा था, नहीं। अज्ञातवास में भी जब उनकी भनक दुर्योधन को लगी थी, उस समय वो पूरी सेना लेकर के युद्ध के लिए गये थे। तब अकेले अर्जुन ने भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य तथा अन्य महारथियों का सामना किया था। उस समय उसका हृदय विदीर्ण नहीं हुआ था, निराशा में नहीं डूबा था और आज महाभारत के समय ऐसी मनोदशा! क्यों इतना निराशा-वादी होने लगा? क्यों इतना निरुत्साही हो गया, क्या कहेंगे? क्या उसको अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं रहा या उसको भगवान के साथ पर संदेह होने लगा? ये भी नहीं था कि उसे भगवान के साथ का संदेह था। ये भी नहीं कि उसे अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं था, फिर भी ऐसी मनोदशा थी, जो उसके हाथ-पैर काँपने लगे, उसका गाण्डीव हाथ से छूटने लगा। वो बार-बार हाथ जोड़कर भगवान से विनती करने लगा कि मुझे ये युद्ध नहीं करना है उसका कारण क्या था? एक उदाहरण याद आता है कि किसी गाँव में एक पंच था। पंच के सामने कोई भी समस्या आती थी तो उसका फैसला पंच ही करता था। कोई कैसा भी गुनाह करके आया हो उसका फैसला भी पंच ही करता था। जिस गुनहगार को जो सजा देनी होती थी वो उसको देते थे, जिसको फांसी देनी होती थी उसे फांसी भी देते थे। लेकिन एक दिन ऐसा हुआ कि उस पंच के समक्ष उस पंच में से ही एक व्यक्ति का अपना बेटा गुनाह करके खड़ा हो गया। उसका गुनाह इस प्रकार का था कि उसको माफी की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। उसको फांसी की ही सजा मिलने वाली थी। उस समय जिस पंच का वो बेटा था उन्होंने बाकी सभी के सामने हाथ जोड़कर माफी मांगना आरम्भ कर दिया या अपनी अर्जी रखनी आरम्भ कर दी। कहा कि आज की दुनिया में नौजवान अपने शक्ति के मद में आ करके, कभी-कभी रास्ता भटक जाते हैं। हमें उन्हें माफ कर देना चाहिए, जीवन में उन्हें अपनी गलती को सुधारने का अवसर देना चाहिए। यह उसका मोह बोल रहा था। वह मोह में आकर जब सबके सामने अर्जी डालता है और हाथ जोड़कर के हरेक से विनती करता है कि आप इन्हें ऐसी सजा न सुनाओ,जो हम अपना पुत्र खो बैठें।

- क्रमशः

एक अद्भुत व्यक्तित्व...

भारत के लोग श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं। 'कृष्ण' नाम लेते ही उन्हें अपने सामने, हाथों में अथवा होठों पर मुरली धारण किये हुए मोर-मुकुटधारी, सांवरे रंग की एक दिव्य मूर्ति की झलक दिखाई देती है। वे 'कृष्ण' शब्द का अर्थ ही 'श्यामला' अथवा 'सांवरिया' मानते हैं और मुरली तो वे कृष्ण के हाथों में शैशव अवस्था से ही, जबकि वह अभी घुटनों के बल चलता होगा, तब से ही दिखाते हैं और इसी अर्थ में ही उसे 'मुरलीधर' भी मानते हैं।

भादो मास के कृष्ण पक्ष में जो अष्टमी आती है, उस दिन लोग श्रीकृष्ण का जन्म हुआ मानते हैं, परंतु श्रीमद्भगवद् से संकेत मिलता है कि श्रीकृष्ण के जन्म लेने पर, अथवा थोड़ा पहले, अन्य मुख्य आठ देवताओं ने भी जन्म लिया था। अतः वास्तव में जन्माष्टमी केवल श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव नहीं बल्कि साथ ही आठ मुख्य देवताओं के भी जन्म का उत्सव है। श्रीकृष्ण जैसे देवता के बहन-भाई आदि संबंधी भी तो देवी-देवता ही चाहिए। देवताओं के बारे में तो प्रसिद्ध है कि वे अपने पुण्य-कर्मों की प्रारब्ध भोगते हैं।

तो स्पष्ट है कि जब उन देवताओं ने और श्रीकृष्ण ने जन्म लिया होगा तब वे अपनी प्रारब्ध भी तो साथ लाये होंगे। आज भी जब कोई बच्चा जन्म लेता है तो लोग कहते हैं कि यह अपनी तकदीर साथ ले आया है। तो क्या श्रीकृष्ण और जिन आठ देवी-देवताओं ने जन्म लिया, तो वे अपने दैवी भाग्य को साथ नहीं लाये होंगे? अवश्य ही लाये होंगे। तो स्पष्ट है कि उनका जन्म द्वापर युग में नहीं बल्कि सतयुग में हुआ होगा क्योंकि देवी-देवताओं की प्रारब्ध के योग्य तो सतयुगी सृष्टि के सतोप्रधान पदार्थ तथा सतोप्रधान एवं धर्मनिष्ठ जन ही होते हैं।

श्रीकृष्ण के सभी भक्त, श्रीकृष्ण को 'वैकुण्ठनाथ' की उपाधि से याद करते हैं और देखा जाये तो यह उपाधि भी उपरोक्त रहस्य की पुष्टि करती है क्योंकि वास्तव में सतयुगी पावन एवं सम्पूर्ण सुखी सृष्टि ही देव-सृष्टि अथवा स्वर्ग एवं वैकुण्ठ है। स्वर्ग या वैकुण्ठ इस मनुष्य लोक से ऊपर कहीं नहीं है बल्कि यह सतयुगी एवं त्रेतायुगी सृष्टि का नाम है जोकि द्वापर युगी और कलियुगी सृष्टि की भेंट में पवित्रता, सतोगुण, दिव्यगुण-सम्पन्नता तथा सुख-शांति के दृष्टिकोण से उच्च है। अतः वैकुण्ठनाथ का वास्तविक अर्थ है 'सतयुगी सुखमय सृष्टि का चक्रवर्ती राजा'। इस प्रकार, श्रीकृष्ण की इस उपाधि से भी संकेत मिलता है कि श्रीकृष्ण सतयुग के आरंभ में हुए।

प्रायः लोग श्रीकृष्ण को एक राजनीतिक नेता, एक अजेय योद्धा, एक उच्च धार्मिक योगारूढ़ महापुरुष, एक कुशल राजदूत, एक प्रतिभाशाली रथवाहक, एक मनमोहक बालक, एक सहायक मित्र, एक निपुण मुरलीवादक के रूप में याद करते हैं। वे मुख्यतः इन्हीं रूपों में इनका गायन करते हैं। परंतु प्राचीन अथवा अर्वाचीन ग्रंथों में इन पहलुओं में श्रीकृष्ण की महानता को स्पष्ट करने के लिए जिन वृत्तांतों का उल्लेख है वे प्रायः उसकी महानता के साधक नहीं बल्कि बाधक हैं। उदाहरण के तौर पर श्रीकृष्ण के बाल्यावस्था में मक्खन चुराने संबंधी जिन वृत्तांतों का उल्लेख है, वे उन्हें 'मोहन' या 'मनमोहन' चित्रित करने के साथ-साथ उनमें चंचलता, अनुशासनहीनता, इन्द्रिय-निग्रह का अभाव, चोरी का अस्तित्व भी प्रदर्शित करते हैं। द्वापर और कलियुग के मनभावने और लुभावने बच्चों का यह प्राकृत स्वभाव होता है-इसलिए उस काल में कवियों ने अपनी कृतियों में श्रीकृष्ण के भी ऐसे ही स्वभाव को उभारा है। वे सोंचते होंगे कि वह बच्चा ही क्या जो नटखट, हठी और चंचल न हो। लगता है कि वे भूल गए होंगे कि श्रीकृष्ण अपने हर आयु-भाग में विलक्षण थे।

वे मनमोहक इसलिए थे कि नैन उनके रूप को देखकर सुख पाते थे, जैसे सारा सौन्दर्य उनके रूप-लावण्य में मुग्ध हो गया हो, ऐसी उनकी न्यारी छवि थी। इसलिए उनका नाम ही हो गया 'सुन्दर'। निस्संदेह उनमें बाल्यकाल की सरलता रही होगी, खेल-कूद भी उनको प्रिय होगा, वे लुकने-छिपने का खेल भी खेलते होंगे, आँख मिचौनी भी करते होंगे, उनकी हँसी, उनका हाव-भाव और उनका हर क्रियाकलाप मनमोहक रहा होगा परंतु उनमें दिव्यता अवश्य रही होगी और जिन नियमों का योगी अभ्यास करते हैं, वे उन्हें जन्म से ही मिले होंगे।

कथा सरिता

रात की बात

एक बार एक संत अपनी जमात के साथ यात्रा कर रहा था। उसे सायंकाल एक जंगल में रुकना पड़ा। रात्रिकालीन प्रवास की सारी व्यवस्थाएं जुटाई गईं। एक वृद्ध आदमी उधर से गुजरा। वह थका हारा था। उसने संत से प्रार्थना की- मैं बहुत थक गया हूँ। संत ने उसे ठहरने की अनुमति दे दी। प्रार्थना का समय हुआ। सब लोग प्रार्थना करने लगे। वह वृद्ध प्रार्थना नहीं करता था। उसने प्रार्थन करने वालों को सुनाते हुए कहा - ईश्वर कहां है? किसने देखा है ईश्वर को? सब धोखा है, पाखण्ड है। संत यह सुनकर स्तब्ध रह गया। उसने कहा - भले आदमी! ऐसी बातें बंद करो। ईश्वर को गालियां मत दो। वृद्ध आदमी ने संत के कथन को अनसुना कर दिया। संत तिममिला उठा। उसने अपने सेवकों को आदेश दिया - इसको यहां से बाहर निकाल दो।

वृद्ध आदमी ने अनुनय के स्वर में कहा - इस भयंकर अंधियारी रात में मैं कहां जाऊंगा? संत ने कहा - ऐसे नास्तिक आदमी को मैं यहां नहीं रहने दूंगा। चले जाओ यहां से। संत के सेवकों ने उसे धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

कहा जाता है - उसी समय ईश्वर प्रकट हुए, उन्होंने कहा यह क्या हो रहा है? झगड़ा क्या है?

संत ने कहा, ऐसा नास्तिक आदमी आ गया, जो ईश्वर को गालियां दे रहा था। बहुत ही नास्तिक आदमी था। वह ईश्वर को कुछ समझता ही नहीं है। सत्तर-अस्सी वर्ष का बूढ़ा होकर भी वह ईश्वर का अपमान कर रहा था। ईश्वर के इस अपमान को कैसे सहन करता? मैंने उसे धक्का देकर बाहर निकलवा दिया।

ईश्वर ने कहा - तुमने यह अच्छा नहीं किया। वह बेचारा रात को कहां जाएगा? दु:ख पाएगा, भटक जाएगा। इतने घोर अंधकार में, खुले आकाश में वह कहां रहेगा? तुम्हारे पास तम्बू है, सब कुछ सुविधाएं हैं। तुमने उसे क्यों निकाला? संत ने कहा, मैं ऐसे आदमी को सहन नहीं कर सकता। ईश्वर बोले, जिस आदमी को मैंने सत्तर वर्ष तक सहा है, क्या तुम उसे एक रात भी सहन नहीं कर सकते? ईश्वर की बात सुनकर संत अपनी करनी पर पछताया और उसने भविष्य में किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं करने की कसम खाई।

गाली पास ही रह गई

एक लड़का बड़ा दुष्ट था। वह चाहे जिसे गाली देकर भाग खड़ा होता। एक दिन एक साधु बाबा एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठे थे। लड़का आया और गाली देकर भागा। उसने सोचा कि गाली देने से साधु चिढ़ेगा और मारने दौड़ेगा, तब बड़ा मज़ा आएगा, लेकिन साधु चुपचाप बैठे रहे। उन्होंने उसकी ओर देखा तक नहीं। लड़का और निकट आ गया और खूब ज़ोर-ज़ोर से गाली बकने लगा। साधु अपने भजन में लगे थे। उन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

तभी एक दूसरे लड़के ने आकर कहा- 'बाबा जी! यह आपको गालियां देता है।' बाबा जी ने कहा- 'हाँ भैया, देता तो है, पर मैं लेता कहां हूँ। जब मैं लेता नहीं तो सब वापस लौटकर इसी के पास रह जाती हैं।' लड़का बोला- लेकिन यह बहुत खराब गालियां देता है। साधु- यह तो और खराब बात है। पर मुझे तो वे कहीं नहीं चिपकीं, सब के सब इसी के मुख में भरी हैं। इससे इसका ही मुख गंदा हो रहा है।

गाली देने वाला लड़का सब सुन रहा था। उसने सोचा, साधु ठीक ही तो कहा रहा है। मैं दूसरों को गाली देता हूँ तो वे ले लेते हैं। इसी से वे तिलमिलाते हैं, मारने दौड़ते हैं और दु:खी होते हैं। यह गाली नहीं लेता तो सब मेरे पास ही तो रह गई। लड़का मन ही मन बहुत शर्मिंदा हुआ और सोचने लगा कि छि: मेरे पास कितनी गंदी गालियां हैं। वह साधु के पास गया, क्षमा मांगी और बोला- बाबा जी! मेरी यह गंदी आदत कैसे छूटे और मुख कैसे शुद्ध हो? साधु ने समझाया- 'पश्चाताप करने तथा फिर ऐसा न करने की प्रतिज्ञा करने से बुरी आदत दूर हो जाएगी। मधुर वचन बोलने और भगवान का नाम लेने से मुख शुद्ध हो जाएगा।'

राजा भोज के प्रश्न का उत्तर

राजा भोज ने दरबारियों से पूछा कि नष्ट होने वाले की क्या गति होती है? इसका उत्तर कोई दरबारी नहीं दे सका। कवि कालिदास से पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि वह कल इसका उत्तर देंगे। राजा भोज रोज़ सुबह टहलने जाया करते थे। अगले दिन टहलकर लौटते समय उन्होंने देखा कि रास्ते में एक सन्यासी खड़ा है, जिसके भिक्षा पात्र में मांस के टुकड़े रखे हुए हैं। उन्हें यह देखकर एक बार भी खुद पर भरोसा नहीं हुआ कि क्या यह सच है! उन्होंने उसे पुन: ध्यान से देखा, तो बड़ी मुश्किल से यकीन हुआ कि जो वह देख रहे हैं, सही है। भोज ने आश्चर्य से पूछा, अरे भिक्षु। तुम सन्यासी होकर मांस का सेवन करते हो? सन्यासी ने उत्तर दिया, मांस खाने का आनंद बिना शराब के कैसे हो सकता है। राजा यह सुनकर चिंता में पड़ गए कि वह क्या सुन रहे हैं। क्या शराब भी तुम्हें अच्छी लगती है? सन्यासी बोला, केवल शराब ही मुझे प्रिय नहीं है, वैश्या भी। उन्होंने पूछा, अरे, वैश्याएं तो धन की इच्छुक होती हैं। तुम साधु हो, तुम्हारे पास तो धन नहीं है। सन्यासी बोला, मैं जुआ खेलकर और चोरी करके पैसे जुटा लेता हूँ। राजा ने पूछा, अरे भिक्षु, तुमको चोरी और जुआ भी प्रिय है? सन्यासी ने कहा, जो व्यक्ति नष्ट होना चाहता हो, उसकी और क्या गति हो सकती है। राजा भोज समझ गए कि यह कालिदास है और कल के प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं। तभी कालिदास ने अपने असली रूप में आकर कहा, भौतिकवाद का मार्ग ही नष्ट होने का मार्ग है। जो भौतिक सुख-सुविधाओं के मायाजाल में उलझकर रह जाता है, वह अपना जीवन ही बर्बाद कर बैठता है।

संतोष का फल

एक बार एक देश में अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। नगर में एक धनी दयालु पुरुष था। उन्होंने सब छोटे बच्चों को प्रतिदिन एक रोटी देने की घोषणा कर दी। दूसरे दिन सवेरे बगीचे में सब बच्चे इकट्ठे हुए। उन्हें रोटियां बंटने लगीं। रोटियां छोटी-बड़ी थीं। सब बच्चे एक दूसरे को धक्का देकर बड़ी रोटी पाने का प्रयत्न कर रहे थे। केवल एक छोटी लड़की एक ओर चुपचाप खड़ी थी। वह सबसे अंत में आगे बढ़ी। टोकरे में सबसे छोटी अंतिम रोटी बची थी। उसने उसे प्रसन्नता से ले लिया और घर चली गई। दूसरे दिन फिर रोटियां बांटी गईं। उस लड़की को आज भी सबसे छोटी रोटी मिली। लड़की ने जब घर लौटकर रोटी तोड़ी तो रोटी में से सोने की एक मुहर निकली। उसकी माता ने कहा- 'मुहर उस धनी को दे आओ।' लड़की दौड़ी-दौड़ी धनी के घर गई। धनी ने उसे देखकर पूछा- 'तुम क्यों आई हो?' लड़की ने कहा- 'मेरी रोटी में यह मुहर निकली है। आटे में गिर गई होगी। देने आई हूँ। आप अपनी मुहर ले लें।' धनी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे अपनी धर्मपुत्री बना लिया और उसकी माता के लिए मासिक वेतन निश्चित कर दिया। बड़ी होने पर लड़की उस धनी की उत्तराधिकारिणी बनी।

अपना-अपना स्वर्ग

एक देवदूत भ्रमण करता हुआ स्वर्ग की ओर जा रहा था। उसकी दृष्टि पृथ्वी पर कीचड़ में फंसे सूअर पर पड़ी। देवदूत को सूअर पर दया आ गई। देवदूत ने पूछा - 'मैं तुमको यहां से निकाल दूं?' सूअर ने कहा - 'ठहरो! मैं इस ओर से ज़रा एक डुबकी और लगा लूं।' कुछ समय बाद पूछा - 'क्या अब मैं तुमको इस कीचड़ से निकाल दूं।' सूअर बोला - 'अभी ठहरो। कीचड़ के उस ओर से एक डुबकी और लगा लूं।' सूअर ने कीचड़ में डुबकी लगाई फिर बोला - 'आप कहां से आए हैं? कहां जा रहे हैं?'

'मैं स्वर्ग से आया हूं, वापस वहीं जा रहा हूं।' 'क्या आप मुझे भी स्वर्ग ले जा सकते हैं?' देवदूत बोला - 'क्यों नहीं, चलो मैं तुमको भी ले चलता हूं।'

सूअर ने फिर प्रश्न पूछा - 'आप यह बताइए कि क्या स्वर्ग में भी ऐसा कीचड़ है?' देवदूत बोला - 'वहां कीचड़ का क्या काम? वहां तो फूलों और फलों के सुंदर-सुंदर बाग हैं। मखमली दूब है।' यह सुनकर सूअर बोला - 'यदि वहां कीचड़ नहीं है तो फिर ऐसा आनंद वहां कहां मिलेगा? मुझे नहीं आना है तुम्हारे साथ। मैं कहता हूं तुम भी एक डुबकी लगा लो, आनंद आ जाएगा।' देवदूत सूअर की अज्ञानता पर हंसकर आगे बढ़ गए।

काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल के सम्माननीय प्रधानमंत्री सुशील कोइराला को राखी बांधते हुए ब्र.कु. राज।

दिल्ली-हरिनगर। सिक्योरिटी सर्विसेज़ विंग के कार्यक्रम में हरिनगर तथा कनेक्टेड सेंटर्स की ओर से रमन जी,कमाण्डेंट सी.आई.एस.एफ. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी।

वहादुरगढ़। 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम के अंतर्गत मंचासीन ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. विनीता, गजराज सिंह, सुनील गोएल, विपिन बजाज, ब्र.कु. अंजली तथा अन्य।

कोल्हापुर-हुपरी। ब्र.कु. सुनंदा को ''समाजभूषण'' पुरस्कार से सम्मानित करते हुए प्रिन्सीपल डॉ. टी.एस. पाटील, डॉ. अनिल भडके, साहित्यकार राम कुरके तथा प्रतिष्ठान अध्यक्ष शंकरराव पाटील।

मंदसौर। स्नेह मिलन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सांसद सुधीर गुप्ता, ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. हेमलता ब्र.कु. संतोष तथा अन्य।

मऊ-उ.प्र.। डॉ. वी.वी.राय को ईश्वरीय संदेश व ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं ब्र.कु. आरती।

बिलीफ या मान्यता या विश्वास

सभी एक बात को लेकर बड़े ही संजीदा हैं कि मान्यताएं कैसे बनती हैं उसका उद्गम कहाँ से होता है इसके पहले वाले श्रृंखला में (आकर्षण बनाम प्रेम) में लेखक द्वारा मान्यता को परिभाषित किया गया था लेकिन पाठक गण चाहते हैं कि मान्यताएं या बिलीफ को और गहराई से हमारे सामने रखा जाए।

इसलिए इस बार बिलीफ अथवा मान्यता की दोबारा एक श्रृंखला शुरु हो रही है, शायद मैं आप सबके विश्वास पर खरा उतर सकूं।

कई बार बार एक प्रश्न सबके अंदर कौंधता है कि बिलीफ क्या है? लॉ ऑफ अट्रैक्शन का सिद्धांत यही तो कहता है कि वो आप प्राप्त नहीं करते जो आप चाहते हैं, आप वो प्राप्त करते हैं जो आप हैं। आप क्या हैं, आप अपने बिलीफ ही तो हैं जो आपने अपने बारे में मान रखा है कि ''मैं ऐसा ही हूं''।

विश्वास और अंधविश्वास में थोड़ा सा फर्क है या यूं कहें कि एक पतली सी लाइन है। यदि कमरे में अंधेरा है तो उस चीज़ को आसानी से नहीं ढूंढ सकते हैं। ऐसा ही मन है जब वो अंधेरे में होता है तो एक तरह से वह पैरालाईज़्ड है, जैसे ही वह लाइट में आता है यानी नॉलेज अथवा ज्ञान होगा तथा उसे उसका अनुभव होगा तो आप उसे जल्दी ढूंढ लेंगे।

अब मैं आपको एक रीयल लाइफ सिच्युएशन देता हूं।

एक लड़का है जिसके अंदर चार तरह की इच्छाएं हैं- पहला है, मुझे फिल्म इंडस्ट्री में कुछ काम करना है या एक नामचीन एक्टर बनना है। दूसरा, मुझे कम्प्यूटर से जुड़ा कोई काम करना है क्योंकि बचपन से मुझे कम्प्यूटर में बहुत रुचि है, और उसने हार्डवेयर का कोर्स किया है और उससे जुड़े हुए उसके अंदर कुछ विचार भी हैं। तीसरा, उसके पिताजी ने उसे कहा, मैं तेरी सरकारी नौकरी लगवा दूंगा और इससे तुझे रिटायर्ड होने के बाद पेंशन भी मिलती रहेगी और तुम्हारा जीवन भी अच्छे से चलेगा।

अगर आप वहां होंगे तो क्या करेंगे? अब मैं आपको बता रहा हूं कि मैं क्या करुंगा। अब यदि मैं एक्टिंग करता हूं और फेल हो जाता हूं तो वैसे कोई हार्ड या फास्ट रूल नहीं है कि मैं सफल नहीं होऊंगा, फिर भी मैं संभावना व्यक्त कर रहा हूं कि यदि ऐसा होता है तो मुझे बैकअप नहीं मिलेगा और घर वाले भी शायद सपोर्ट ना करें और खुद भी लगेगा शायद मैं असफल हो गया, तो मैं क्यों ना जो पिताजी कह रहे हैं वो कर लूं। उसमें जो दूसरी डिज़ायर है कि यदि मैं कम्प्यूटर में कुछ करना चाहूं तो ज़्यादा से ज़्यादा जो लोगों के पास पुराने कम्प्यूटर हैं उसे मैं खरीदूंगा और रिपेअर करके बाज़ार में बेच दूंगा, इसके लिए शायद लोग मेरा मज़ाक भी उड़ा सकते हैं कि यह तो कबाड़ी है। तो इन दोनों के अलावा मैं, पापा जो कह रहे हैं वही कर लेता हूं।

लेकिन मैं शायद खुश ना रहूं क्योंकि मैंने अपनी आंतरिक इच्छा को मार दिया। और मान लो मुझे एक्टिंग और कबाड़ी में से किसी एक को चुनना है तो मेरे पास दो विकल्प हैं। फीलिंग एक्टर बनने में ज़्यादा अच्छी है और कबाड़ी की दुकान में फीलिंग कम अच्छी है। लेकिन मैंने बचपन से ही कम्प्यूटर से प्यार किया है और मेरी उसमें दक्षता भी है। अब एक्टिंग में नाम, शोहरत और पैसा भी है जो एक आम आदमी का सपना होता है। तो मेरे पास अगर समय है तो मैं एक्टिंग पहले कर लेता हूं। और चीज़ें तो बाद में भी हो सकती हैं। अब देखिए होता क्या है, जिस काम में हमें अच्छी फीलिंग हो रही होती है, हम बिना कुछ सोचे उस दिशा में कदम उठा लेते हैं चाहे वो हमारे लिए ठीक है भी या नहीं, बस करना है। अब मान लीजिए कि आपने महाराष्ट्र से मुंबई की बस पकड़ी और मुंबई आ गए।

अब आप क्या करेंगे अपने फोटोग्राफ शूट करेंगे तथा उन्हें अलग-अलग विज्ञापन एजेंसियों में देंगे। इसमें एक बात सोचने लायक है कि एक तो हमारी इच्छा शक्तिशाली थी, अब वो और ही स्ट्रांग होती जा रही है और सपनों की दुनिया में मैं हीरो बन गया हूं, लेकिन रीयल में मैं हीरो नहीं हूं। अब आपके भेजे गए फोटोग्राफ से कुछ प्रोडक्शन हाऊस से आपको फोन भी आ गया। अब आपकी इच्छाओं कि स्पीड और बढ़ गयी। हो सकता है कि आपको एक्टिंग में सफलता मिल जाए, हो सकता है ना भी मिले, अंधेरा है, कन्फ्यूज़न है। क्यों है कन्फ्यूज़न? क्योंकि ना तो आपका एक्टिंग में कोई इंट्रेस्ट है और ना ही आपको कोई ज्ञान है, और ना ही आपको इसका कोई अनुभव है। बस अपना लुक या फीचर ठीक-ठाक देखा तो सोचा कि मैं हीरो बन गया। अब आप अगर साक्षात्कार देने जाएंगे तो आपको ज़ीरो मिलेगा क्योंकि ''आपको वो मिलेगा जो आप चाहते हैं या आपको वो मिलेगा जो आप है '' आप एक हीरो तो नहीं हैं। हज़ारों में प्रायिकता है कि शायद आपके अंदर हीरो छुपा भी हो जो आपको पता भी ना हो। ऐसे ही बहुत सारे लोग हैं जो सिर्फ भाग रहे हैं लेकिन उन्हें पता नहीं है कि वो क्या कर रहें हैं। बस बिना बिलीफ (ज्ञान व अनुभव) सबकुछ कर रहे हैं।

- क्रमशः....

-ब्र.कु. अनुज,डिफेन्स कॉलोनी दिल्ली

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service

"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services

Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service

Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service

Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना–ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-

Email- mediabkm@gmail.com

M-8107119445

प्रश्नः आत्माभिमानी स्टेज क्या है? बाबा कहते हैं कि अष्ट रत्न ही अन्त तक आत्माभिमानी बनते हैं। इसमें ऐसा क्या रहस्य है?

उत्तरः हमें ये ज्ञान तो मिल गया है कि मैं कौन हूँ, मैं आत्मा हूँ, परन्तु मैं कौन सी आत्मा हूँ - यह सत्य जानना बाकी है। और यह रहस्य समझ में आता है स्वमान के अभ्यास से। स्वमान में स्थित हुई आत्मा ही आत्माभिमानी है। जैसे मैं एक महान आत्मा हूँ..इस स्वमान का स्वरूप बनना माना जीवन में सर्व महानताएँ आना। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ - इस स्वमान का स्वरूप बनना माना सर्व शक्ति-सम्पन्न बनना, स्वराज्य अधिकारी बनना। मैं विजयी रत्न हूँ - इसका स्वरूप बनना माना माया पर व हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त करना। आत्माभिमानी की दूसरी बात - आत्मा के सातों गुण जीवन में आ जाएं। ज्ञान, प्रेम, सुख, शान्ति, शक्ति, पवित्रता व आनंद। मैं ज्ञान-स्वरूप हूँ तो सम्पूर्ण अज्ञान नष्ट हो जाए। कर्म ज्ञान स्वरूप हो जाएं। असत्य पूर्णतः समाप्त हो जाए। मैं प्रेम स्वरूप हूँ। सबसे आत्मिक प्रेम हो जाए। घृणा ईर्ष्या द्वेष पूर्णतः समाप्त हो जाए। मैं सुख स्वरूप हूँ। आत्मा ईश्वरीय सुख से सम्पन्न रहने लगे। किसी भी बात या घटना का तनिक भी दुःख मन को स्पर्श न करे। मैं शान्ति स्वरूप हूँ तो अशरीरी पन द्वारा गहन शान्ति की अनुभूति रहे। हमारी शान्ति को कोई भी डिस्टर्ब न कर सके। हमारी शान्ति हमारी शक्ति बन जाए। मैं शक्ति स्वरूप हूँ। हम सर्व शक्ति सम्पन्न बन जाएं। भय का नामोनिशान न रहे। मैं पवित्र स्वरूप हूँ। तो हम सर्व विकारों से मुक्त बन जाएँ। भय का नामोनिशान न रहे। पवित्रता का तेज व पवित्रता की शक्ति हमारे ललाट से चमकती हो। मैं आनंद स्वरूप हूँ - हमें सदा आंतरिक खुशी रहे। अशरीरी पन के द्वारा हम निरंतर अतीन्द्रिय सुख में रहें। बार-बार अशरीरीपन के अभ्यास से, स्वमान के अभ्यास से व योग लगाते-लगाते हम अंत तक आत्माभिमानी बन सकते हैं। यही अध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है। इसलिए अष्ट रत्न ही इसे प्राप्त करते हैं।

प्रश्नः मैं एक गृहस्थी माता हूँ। 10 वर्ष से ज्ञान में हूँ। मेरे घर में सदा झगड़ा होता रहता है। पति को अत्यधिक क्रोध है। दोनों बड़े बच्चों से सदा ही उनकी कहा सुनी होती रहती है। अपने घर में मुझे शान्ति लानी है। मैं क्या करूँ?

उत्तरः आप स्वयं को घर की ईष्ट देवी समझकर चलो। सारा दिन कम से कम 10 बार यह याद करना कि मैं शान्ति की देवी हूँ और मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ। मेरे अंग-अंग से पूरे घर में शान्ति की किरणें फैल रही हैं। आप घर के झगड़े में सम्मिलित न हो। आप अधिक समय शान्ति में रहें और अभ्यास करें कि मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ और आपके बच्चे व पति तीनों आत्माएँ हैं और वे भी शान्त स्वरूप हैं। भोजन बनाते समय संकल्प करें कि इस पवित्र भोजन को खाकर इन सबका मन शान्त हो जाए। सवेरे उठकर घर में योग के व शान्ति के वायब्रेशन्स फैलाओ ताकि जब वे उठें तो उन्हें अच्छी फीलिंग हो। उनकी अनुपस्थिति में घर में

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

ज्ञान के गीत बजाएँ व स्वयं को आनंद की स्थिति में रखें ताकि घर में अच्छे वायब्रेशन्स फैलें। अपने घर में 3 बार बीस-बीस मिनट बैठकर योग करें। और जो आपकी बात मानता हो उसे चुप रहने की प्रेरणा दें। ये सब 2 मास तक करें। अवश्य आपके परिवार में शान्ति आ जाएगी।

प्रश्नः आप भारत की क्या सेवा करते हैं। धर्मों ने तो संसार में हिंसा ही फैलाई है। इसलिए धर्म की ओर नई पीढ़ी आकर्षित नहीं है। देश को अब धर्म की नहीं किसी और चीज़ की आवश्यकता है।

उत्तरः आपने सच कहा, देश को धर्म की ज़रूरत नहीं। ज़रूरत है अध्यात्म की। अध्यात्म सर्वमान्य सत्य है। अध्यात्म से ही जीवन में नैतिकता आती है। सच्चा धर्म तो हिंसा नहीं सिखाता है। जहाँ धर्म में हिंसा है वहाँ धर्म का पवित्र स्वरूप लोप हो जाता है और ऐसा धर्म अपने अनुयायियों को सुख-शान्ति नहीं दे सकता। सत्य धर्म वही है जिससे मनुष्य का जीवन धर्म के अनुरूप हो। विचार कीजिए - यदि घर-घर में शान्ति हो, निःस्वार्थ प्रेम हो, पवित्रता हो, धन की मारामारी न हो तो कितने ही कोर्ट केस नहीं होंगे, कहीं रेप नहीं होंगे, हिंसा नहीं होगी, तनाव नहीं होगा तो देश में कई समस्याएँ होगी ही नहीं। यही ब्रह्माकुमारियाँ सिखा रही हैं। सिखा ही नहीं रहीं बल्कि करोड़ो लोग इसका पालन कर रहे हैं - यह सच्ची देश सेवा है। सोचें...यदि हर मन में ईमानदारी हो, संतोष हो, सुख लेने-देने की भावना हो, त्याग व सहनशीलता हो, पवित्रता व सच्चाई हो तो देश का कैसा स्वरूप होगा। हम यही कर रहे हैं। यही देश की सच्ची सेवा है। जो लोग हॉस्पिटल, कॉलेज या अन्य रूप से सेवा भाव दिखा रहे है उनमें सेवा भाव नहीं, धन कमाने का भाव है। मनुष्य को शिक्षित करना – उन्हें अच्छे संस्कार देना – यह अलग ही बात है – और यही देश सेवा हम कर रहे हैं। लोग नहीं जानते कि यदि एक करोड़ लोग पवित्र बन जाएँ तो ये भारत भूमि धन-धान्य से भरपूर हो जाए। यहाँ न प्राकृतिक प्रकोप हों, न अकाल पड़े, न रोग हों, न शोक हो, न कोई रोये और न मन परेशान हो। यही सेवा अर्थात् भारत को सुख, शान्ति व समृद्धि युक्त स्वर्ग बनाने की ब्रह्माकुमारियाँ कर रही हैं। और ज्ञान-बल, योग-बल व पवित्रता के बल से अब हमारा देश स्वर्ग बनेगा ही।

प्रश्नः मैं कई वर्ष से ज्ञान में हूँ, परन्तु मेरा पति धारणा के लिए मानता नहीं। परन्तु अब मैं पवित्र बनना चाहती हूँ - विधि बतायें...?

उत्तरः पवित्र बनना, ये प्रभु आज्ञा है। पवित्रता ही हमारी मूल स्थिति है। अब ये 5000 वर्ष का खेल पूर्ण हो रहा है। सबको पवित्र बनकर घर जाना ही है। इसलिए किसी भी तरह दृढ़ प्रतिज्ञा करके, सहन करके, इस प्रभु आज्ञा को अपनाना ही है। मनुष्य में वासनाएँ अति में हैं, पवित्र बनना उनके लिए कठिन होता है, क्योंकि वासनाएँ उन्हें सताती हैं। वासनाएँ पूर्ण न हों तो वे क्रोध में पागल हो जाते हैं। आपको निम्न विधि अपनानी है। भोजन बनाते समय सच्चे मन से 100 बार याद करना है कि मैं परम पवित्रात्मा हूँ। इससे भोजन पवित्र हो जाएगा। खिलाते समय संकल्प करना कि इस भोजन को खाकर इस आत्मा का चित्त पवित्र हो जाए। सवेरे उठते ही 7 बार संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और ये आत्मा मेरी सम्पूर्ण सहयोगी है। 10 मिनट प्रतिदिन सवेरे उन्हें पवित्र वायब्रेशन्स देना व संकल्प देना कि तुम एक पवित्र आत्मा हो, भगवान के बच्चे हो, अब पवित्र हो जाओ। ये सब लगातार 3 मास करना। साथ में उस आत्मा के लिए प्रतिदिन एक घण्टा योग भी करना तो शिव बाबा आपकी श्रेष्ठ इच्छा अवश्य पूर्ण करेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

श्रीकृष्ण जन्म जेल में या महल में.. ?

भारत त्यौहारों का देश है। जन्माष्टमी उन त्यौहारों में एक अति आकर्षक पर्व है। इस दिन सभी भक्तों का मन कृष्णमय हो जाता है। श्रीकृष्ण के मंदिर सज जाते हैं। चारों ओर उनके ही गीत गूँजारित होते रहते हैं। अनेक लोग व्रत रखते हैं और आह्वान भी करते हैं कि हे प्रभु, आप पुनः कब आओगे क्योंकि वो समझते हैं कि श्रीकृष्ण ही पालनहार हैं, तारनहार हैं, विष्णु के साकार स्वरुप हैं और अब तो धर्म की ग्लानि का समय है तो अब तो उन्हें अवश्य आना चाहिए।

सभी लोग श्रीकृष्ण को बहुत प्यार करते हैं। जानते हो क्यों? यूँ तो राम के प्रेमी भी बहुत हैं तो शिव शक्तियों को भी प्यार करने वालों की कमी नहीं, परंतु ये देखा जाता है कि श्रीकृष्ण के भक्त तो निरंतर ही उनको दिल में समाकर रखते हैं। क्या ये सोचकर कि उन्होंने सबका उद्धार किया था तो वो हमारा भी उद्धार करेंगे या इसका कोई और भी कारण है?

श्रीकृष्ण को लोग बहुत प्यार करते हैं क्योंकि वे सबसे ज्यादा पवित्र हैं। पवित्र आत्मा ही दूसरों को आकर्षित करती है। ये बात सुनकर शायद आप सोचते होंगे कि उनको तो 8 पटरानियाँ थी और उन्होंने 16108 कन्याओं को शिशुपाल की जेल से छुड़ाकर उनसे विवाह किया था तो ऐसा व्यक्ति जिसकी हजारों रानियाँ हों, पवित्र कैसे रह सकता है? परंतु यह भी सोचने की बात है कि किसी एक मनुष्य की हजारों रानियाँ कैसे हो सकती हैं और उनसे लगभग डेढ़ लाख संतान की उत्पत्ति कैसे संभव है? सच तो यही है कि वे सम्पूर्ण पवित्र, सम्पूर्ण निर्विकारी, 16 कला सम्पूर्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम थे।

श्रीकृष्ण सतयुग के प्रथम राजकुमार थे — दिखाया गया है कि प्रलय के बाद श्रीकृष्ण पीपल के पत्ते पर अगूँठा चूसते हुए आए। यह इसी बात का प्रतीक है कि प्रलय के बाद पुनः सतयुगी सृष्टि का उदय होता है और श्रीकृष्ण का वहाँ आगमन हुआ। कई लोग ये भी मानते हैं कि श्रीकृष्ण का आविर्भाव द्वापरयुग के अंत में हुआ और उन्होंने महाभरत युद्ध का संचालन किया। मोहग्रस्त अर्जुन को गीता ज्ञान दिया और आसुरी संप्रदाय का विनाश कराकर दैवी संप्रदाय की स्थापना की, परंतु सोचने की बात है कि द्वापर के बाद तो अधर्म का युग कलयुग आ गया तो सत्धर्म की स्थापना कहाँ हुई? ईश्वरीय ज्ञान के आधार से हम जानते हैं कि श्रीकृष्ण सतयुग के प्रथम राजकुमार थे।

उनका जन्म जेल में नहीं महल में — ये तो सर्वविदित है कि श्रीकृष्ण का जन्म मध्यरात्रि में कंस के कारावास में हुआ था। इस बात पर जरा चिंतन कीजिये - जो बहुत महान आत्माएँ होती हैं, पवित्र आत्माएँ होती हैं, जो अति भाग्यवान होते हैं, उनका जन्म तो ब्रह्ममुहूर्त में ही होता है क्योंकि तब प्रकृति पवित्र होती है। पवित्र प्रकृति पवित्र आत्माओं का आह्वान करती है। जेल में तो कष्टों में उनका जन्म होता है जिनके कर्मों का खाता बहुत जटिल हो। श्रीकृष्ण तो सबसे अधिक पुण्यात्मा थे। वो तो सम्पूर्ण थे इसलिये उनका जन्म जेल में नहीं राजमहलों में हुआ था। असुर संहार के लिए तो निराकार परमात्मा का अवतरण होता है। सबके उद्धारक तो वही हैं। श्रीकृष्ण का जन्म तो बैकुण्ठ पर राज्य करने के लिए हुआ था इसलिये उनको वैकुण्ठनाथ भी कहा जाता है। भले ही शास्त्रों में ऐसे चमत्कारिक वृत्तांत लिखे हों कि उनके जन्मते ही उनके पिता उन्हें गोकुल ले गए लेकिन अब भगवान ने बताया है कि श्रीकृष्ण के जन्म के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ, वे तो बचपन से ही अति महान, अति भाग्यवान थे।

श्रीकृष्ण ने देवपद कैसे पाया?

कहा गया है — मनुष्य से देवता किए करत ना लागी वार। ज्ञान के सागर परमात्मा ही कल्पांत में सत्य ज्ञान देकर उसका आचरण कराते हैं। उन्हीं के लिए तो कहा गया है कि नर ऐसी करनी करे जो नारायण बन जाए और नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी बन जाए। जब भगवान धरा पर आते हैं तो श्रीकृष्ण की आत्मा जन्म लेते-लेते जब कलयुग के अंत में पहुँचती है तब निराकार परमात्मा उनके तन में प्रवेश करते हैं और उनका नाम रखते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। ईश्वरीय ज्ञान लेकर ब्रह्मा भी सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी और सर्वश्रेष्ठ योगी बनते हैं । वे अपने जीवन में महान समर्पण करते हैं और महान तपस्वी बनते हैं। उनके द्वारा ही परमात्मा नयी सृष्टि रचने का दिव्य कर्तव्य करते हैं और वही सतयुग में जाकर सतयुग के प्रथम राजकुमार श्रीकृष्ण बनते हैं। सतयुगी दैवी स्वराज्य की स्थापना कर निराकार परमात्मा ये सृष्टि की सत्ता उनके हाथ में सौंपकर अपने धाम में चले जाते हैं और वे पालनहार बनकर सतयुगी दैवी स्वराज्य को संभालते हैं। जब वे गद्दी पर बैठते हैं तो उन्हें ही श्री नारायण कहा जाता है।

ये समय चल रहा है जबकि स्वयं परमात्मा सत्य ज्ञान देकर मनुष्य को देवता बना रहे हैं जो सतयुग-त्रेतायुग में देवकुल की आत्माएँ थीं, वे अब पुनः राजयोग की तपस्या करके देवपद पाने के लिए श्रेष्ठ साधना कर रही हैं।

इस जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण जैसा बनने का संकल्प लें — जन्माष्टमी के दिन सभी उनके प्यार में व्रत रखते हैं। व्रत तो हम जन्म-जन्म रखते आए और सोचते आए कि उनकी भक्ति और व्रत से वो प्रसन्न हो जाएँगे और प्रसन्न होकर मनइच्छित फल प्रदान करेंगे। प्रसन्न तो वे सदा ही रहते हैं परंतु वे उन पर बहुत प्रसन्न होते हैं जो उन जैसा पवित्र बनने का व्रत लेते हैं। तो इस जन्माष्टमी पर हम व्रत लें कि इस भारत को स्वर्ग बनाने के लिए ईश्वरीय आज्ञाओं पर चलकर हम पवित्र बनेंगे और अपने खानपान को सात्विक करेंगे। तामसिक भोजन का भोग कभी श्रीकृष्ण को नहीं लगाया जाता। यदि आपको सचमुच श्रीकृष्ण से प्यार है तो अपने भोजन और जीवन को सात्विकता से भर लें।

क्या हम श्रीकृष्ण को इन आँखों से देख सकेंगे?

हमारे चित्रों में लिखा है कि इस महाभारी महाविनाश के बाद शीघ्र ही श्रीकृष्ण आ रहे हैं। सभी लोग पूछते हैं कि आखिर और कितने वर्ष लगेंगे। तो हम आपको बता दें कि अब आपको लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। संगमयुग के 100 वर्ष पूर्ण होते ही श्रीकृष्ण का आगमन इस धरा पर हो जाएगा परंतु याद रहे कि श्रीकृष्ण के चरण इस पतित धरती पर नहीं पड़ सकते। महाविनाश के बाद जब ये वसुधा पावना हो जाएगी, जब प्रकृति शांत व शीतल हो जाएगी, तब उस सर्वश्रेष्ठ महान आत्मा का जन्म इस धरा पर होगा।

परंतु इस पवित्र आत्मा को इन अपवित्र नयनों से नहीं देखा जा सकेगा। उन्हें तो वही देख सकेंगे जिन्होंने अपनी आँखों को भी बहुत पवित्र बनाया होगा। इस जन्माष्टमी पर हमारी सबके लिए यही शुभकामना है कि आप अपने अंग-अंग को शीतल और सुगंधित करें ताकि श्रीकृष्ण के साम्राज्य में आप भी प्रवेश पा सकें। तब आपको उनकी पूजा नहीं करनी होगी, बल्कि उनके साथ का परमानंद प्राप्त होगा।

- ब्र.कु.सूर्य, मधुबन ।

राँची। झारखण्ड के गवर्नर डॉ. सईद अहमद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला,सेवाकेन्द्र संचालिका।

कोचीन। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश वी.आर. कृष्णा अय्यर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा। साथ हैं ब्र.कु. वासन।

रायपुर। विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल को रक्षासूत्र बोधते हुए ब्र.कु.सविता ।

सोनई। समाजसेवी अन्ना हजारे जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उषा। साथ हैं ब्र.कु. दीपक।

दिल्ली-मंडावली। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सिरसा।

टिकरापारा-बिलासपुर। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आध्यात्मिक कार्यक्रम में दिव्य उद्बोधन देते हुए ब्र.कु. मंजू तथा ध्यानपूर्वक सुनते हुए श्रोतागण।

उपेक्षित व्यवहार लोगों के मन को कुंठित करता

यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा त्रीदिवसीय सम्मेलन का आयोजन।

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, नितिन दोसा, गगन मोहन त्रिपाठी, जे.के. वर्मा, ब्र.कु. दिव्यप्रभा,संयोजिका,यातायात परिवहन विभाग, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. सुरेश,मुख्यालय संयोजक।

ज्ञानसरोवर। उपेक्षित व्यवहार से लोगों के मन को कुंठित करना पाप है। नियमों को ताक पर रखकर किए गए कार्य कभी संतोषजनक नहीं होते हैं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात प्रभाग द्वारा 'स्पीड सेफ्टी स्प्रीच्युअलटी' विषय पर आयोजित सम्मेलन में इंडियन ऑटोमोबाइल एसोसिएशन फेडरेशन के अध्यक्ष नितिन दोसा ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि अंत:करण में पनप रहे विविधता में एकता के विपरीत विचारों को समभाव में परिवर्तन करने से परिवार, समाज, देश के प्रति सेवा करने का जज़्बा पैदा होगा। समाज का उर्ध्वगमन तभी संभव है जब मनुष्य के विचारों में अध्यात्म का समावेश हो। सहज राजयोग से सामाजिक सेवाओं के लिए नि:स्वार्थ भाव से समर्पणमयता, ईश्वरीय चिंतन और विश्व कल्याण की भावनाएँ जागृत होती हैं।

गगन मोहन त्रिपाठी,मुख्य प्रबंधक, भुवनेश्वर पश्चिमी कोस्ट रेलवे ने कहा कि कोई भी कार्य करने के लिए वर्तमान में भविष्य की बातें सोचने से अनेक दुर्घटनाएँ घटित होती जा रही हैं। विभिन्न प्रकार की घटनाओं से जीवन को सुरक्षित रखने के लिए कार्य करते समय अपने मन में श्रेष्ठ विचारों को ही स्थान दिया जाना चाहिए।

जे.के. वर्मा,एस.डी.जी.एम. मुख्य सतर्कता अधिकारी,पश्चिमी मध्य रेलवे ने कहा कि जीवन में अनुभव की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। हद के प्रलोभन की प्राप्ति से मन में पनप रही अशांति को समाप्त करने के लिए ईश्वर शिव पिता से अविनाशी संबंध जोड़ना ज़रूरी है। उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन के नियमों व मर्यादाओं का पालन करने से जीवन जीने की कला में निखार आता है।

ब्र.कु. दिव्यप्रभा,राष्ट्रीय संयोजिका,यातायात सेवा प्रभाग ने कहा कि दूषित व अनावश्यक कामनाएँ जीवन में प्रतिशोध, घृणा और पद-प्रतिष्ठा की भूख बढ़ाकर मनुष्य के दिन के चैन और रात की नींद को छीन रही हैं। आध्यात्मिकता मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाती है। ब्र.कु. गीता,राष्ट्रीय संयोजिका,उद्योग सेवा प्रभाग ने कहा कि राजयोग का अभ्यास करने से मानव के प्रति सद्भावना, सहानुभूति, परस्पर सहयोग और भातृत्व की भावनाएँ जागृत होती हैं जिससे समाज में सुख, शान्ति, आनंद और पवित्रता का माहौल निर्मित करना संभव है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कुन्ती, ब्र.कु. बिन्दू, मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. सुरेश आदि ने भी अपने विचार व्यक्ति किए।

साधनों का उपयोग करने के साथ साधना कम न हो

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए सतीश आर.सोनी। साथ हैं ब्र.कु. कमलेश, गौरी शंकर गुप्ता, ब्र.कु. मीरा तथा अन्य।

ज्ञानसरोवर। जीवन एक मधुर यात्रा है, हम सभी इस यात्रा को खुशियों से भर सकते हैं। कहा गया है कि जैसा हम सोचते हैं वैसा ही होता है। अगर हम यह तय कर लें कि हमें आनंदित ही रहना है तो हम ज़रूर वैसा कर सकते हैं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के शिपिंग एवं एवीएशन प्रभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन में शिपिंग एवं एवीएशन प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. मीरा ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हम अपने वर्तमान को सुधारकर अपना भविष्य सुधार सकते हैं। सदा काल की खुशी के लिए हमें स्वयं को जानना ज़रूरी है।

ट्रिनीडाड और टोबैगो में भारतीय उच्चायोग के उच्चायुक्त गौरी शंकर गुप्ता ने ब्रह्माकुमारी संस्था के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मनुष्य कभी न कभी स्वयं से यह ज़रूर पूछता है कि मैं कौन हूँ और मैं कहाँ से आया हूँ? आपको अपने इस प्रश्न का उत्तर यहाँ से प्राप्त होगा। हमें भौतिकता से उपर उठकर सोचने की जरूरत है।

सतीश आर.सोनी,सह प्रबंध निदेशक, महाराष्ट्र टूरिज़्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन ने कहा कि मैं यहाँ पर आकर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। इस सम्मेलन का विषय भी कितना सुंदर है: जीवन का आनंद। पर्यटन आनंद प्रदान करने का एक विशेष माध्यम है। बिना किसी चार्ज के यहाँ कितना महान कार्य चल रहा है। हम धन्य हैं।

संजय जैन,जी.एम.,एयर पोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने ऐसा अवसर प्रदान करने हेतु धन्यवाद देते हुए कहा कि हमें स्वयं के भीतर ही झांकने और ढूँढ़ने से खुशियों की प्राप्ति होगी। यहां उसकी विधि सहज बताई जा रही है।

भानू प्रताप सिंह,सहायक निदेशक,राज. टूरिज़्म डिपार्टमेंट ने कहा कि पर्यटन के बिना जीवन अधूरा है। यह अध्यात्म से जुड़ी संस्था जीवन के हर क्षेत्र में काफी संजीदगी से अपनी सेवाएं देती है। मैं इस संस्था का बहुत आभारी हूँ। इस संस्था ने आबू पर्वत का नाम देश विदेश तक पहुँचा दिया है। ब्र.कु. सुमन,मुख्यालय संयोजक ने भी संबोधित किया।

भेदभाव को समाप्त करते हैं खेल

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। खेल एक ऐसा विषय है जो रंग, रूप, देश, धर्म, भाषाओं की सीमाओं को लांघकर सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त कर रिश्तों को मजबूत करता है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के खेल सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी धनंजय महाधिक ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि खेल देशों के आपसी संबंध सुधारने का जरिया है। ब्रह्माकुमारी संगठन ने समाज के हर वर्ग के साथ जुड़कर मूल्यों को बढ़ावा देने की जो मुहिम छेड़ी है, उससे न केवल देश में बल्कि विदेश के खिलाड़ियों को भी भारतीय संस्कृति से जोड़ने का गौरव हासिल किया है।

हैदराबाद खेल प्रशासन अधिकारी नरसैय्या के. ने कहा कि विदेशी संस्कृति के बीच भारतीय संस्कृति को प्रचारित करने का खेल भी अहम माध्यम है। खिलाड़ियों को अपने देश की सांस्कृतिक परंपराओं को निर्वहन करने के भरसक प्रयास करने चाहिए।

ज्ञानसरोवर निदेशिका डॉ. निर्मला ने कहा कि खेलों में सद्भावना का माहौल बनाए रखने के लिए अध्यात्म एक सशक्त माध्यम है। अध्यात्म जाति-पाति सहित अनेक प्रकार के भेदभावों को समाप्त कर आपसी सौहार्द को बढ़ाता है।

खेल सेवा प्रभाग अध्यक्ष डॉ. बसवराजऋषि ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों से सम्पन्न खिलाड़ी देश के सम्मान के लिए कड़ी मेहनत व प्रमाणिकता से किए गए परिश्रम के साथ अपना सबकुछ दांव पर लगा देता है। जिसके लिए जीवन के हरेक क्षेत्र में कामयाबी के द्वार स्वत: खुल जाते हैं।

ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए खेल प्रभाग की संयोजिका ब्र.कु. शशिप्रभा, धनंजय महाधिक, ब्र.कु. जगबीर, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, खेल प्रभाग के अध्यक्ष बसवराज, राजिया शेख तथा अन्य।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. शशि ने कहा कि सर्वमान्य संस्कृति के खेलों के माध्यम से विश्व बंधुत्व की भावनाओं को बल मिलने के साथ संबंधों को सुधारने का कार्य भी करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय एथलीट राजिया शेख ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा खेलों के माध्यम से जिन मूल्यों को प्रसारित किया जा रहा है उनकी बदौलत समाज का एक बड़ा वर्ग आज अपने को गौरवान्वित महसूस करता है। इसलिए मूल्यों को किसी भी हालत में नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। मुख्यालय संयोजक जगबीर सिंह ने खेलों में खिलाड़ियों व प्रशिक्षकों के मध्य सद्भाव बनाए रखने के उपाय सुझाए। राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. अंजलि,हैदराबाद ने राजयोग के अभ्यास से मानसिक एकाग्रता को बढ़ाने की विधि पर प्रकाश डाला।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - **9414006096, 9414182088,** Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश** - **2500** रुपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 14th Aug 2014

संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।